ओ३म्

वर्षम् - १०, अङ्कः - १३१

वैशाख-ज्येष्ठमासः-२०७६/ मईमासः-२०१९

आर्ष-ज्योतिः

ज्योतिष्कृणोति सूनरी

श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष-महाविद्यालय-न्यास का द्विभाषीय मासिक मुखपत्र

31 मई एवं 1, 2 जून 2019
शुक्र, शनि, रवि को गुरुकुल पौन्धा, देहरादून का
19 वाँ वार्षिकोत्सव अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ
मनाया जा रहा है,

आप सभी सादर आमन्त्रित हैं...

प्रसारणकार्यालयः

श्रीमद् दयानन्दार्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुलम् पौन्धा,
देहरादूनम् (उत्तराखण्डः)

दूरवाणी - ७५७६४६६६५६ चलवाणी - ०६४१११०६१०४

ई-मेल : arsh.jyoti@yahoo.in Website: www.pranwanand.org

आओ, चलें! आर्यों के तीर्थस्थल || ओ३म् || आओ, चलें! गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौन्धा देहरादून द्वारा आयोजित

योग-साधना एवं स्वाध्याय-शिविर

दिनांक : 27 मई से 31 मई 2019 तक

स्थान : श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल, पौन्धा, देहरादून (उ.ख.)

'स्वाध्यायान्मा प्रमदः' (तैत्तिरीयोपनिषद्-१/११) अर्थात् स्वाध्याय से प्रमाद (आलस्य) नहीं करना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने प्राचीन आर्ष परम्परा को उद्धृत करते हुए सभी आश्रमों में ईश्वरोपासना एवं स्वाध्याय की परम्परा को अक्षुण्य बनाये रखने का निर्देश किया है। वर्तमान में स्वाध्याय व ईश्वरोपासना से विमुख होने से अनेक प्रकार की भ्रांतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। उपनिषद् के निर्देश का अनुपालन करते हुए दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा एवं श्रीमद् दयानन्दार्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा देरादून के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 31 मई, 1, 2 जून 2019 को आयोजित होने वाले श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा देहरादून के 19 वें स्थापना दिवस एवं वार्षिकमहोत्सव के शुभअवसर पर योग-साधना एवं स्वाध्याय शिविर का आयोजन 27 मई से 31 मई 2019 तक किया जा रहा है। इस शिविर में पूज्य स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के मार्गदर्शन में योग-साधना का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा स्वाध्याय शिविर के आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री जी (मुम्बई) होंगे। पिछले वर्षों में सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के प्रकरण का अध्ययन किया गया। इस सत्र में महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रणीत पंचमहायज्ञविधि का अध्ययन कराया जायेगा। शिविर में शुद्ध-मन्त्रोच्चारण, मन्त्रों के अर्थ, पंचमहायज्ञविधि की अनिवार्यता आदि विषयों पर चर्चा-परिचर्चा की जायेगी।

आप सपरिवार इष्ट मित्रों के साथ अधिक से अधिक संख्या में शिविर में भाग लेकर आत्मकल्याण के उपासक बनें। आपके निवास, भोजन आदि की समुचित व्यवस्था गुरुकुल की ओर से निःशुल्क रहेगी।

नोट : शिविरार्थियों को शिविर-दिनचर्या में सहभागी बनना आवश्यक है। शिविर में कॉपी, पेन, सम्भव हो तो पंचमहायज्ञविधि की पुस्तक तथा ऋतु अनुसार ओढ़ने के लिए चादर साथ लायें।

मार्गसंकेत

देहरादून रेलवे स्टेशन एवं बसस्थानक (ISBT) से प्रेमनगर पहुँचकर पौन्धा जाने वाले मैजिक से गुरुकुल पौन्धा पहुँचा जा सकता है। जिन सज्जनों की सूचना पूर्व में ही होगी तो उन्हें रेलवे स्टेशन अथवा बसस्थानक से लाने की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से की गई है।

सम्पर्क सूत्र

श्री सुखवीर आर्य (संयोजक एवं मन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) - 9350502175

गुरुकुलपौन्धा - 9411106104, 7900665649, 9411310530, 7017579268, 8810005096

वेदविद्या, संस्कृतभाषा के प्रचार-प्रसार, ऋषि लंगर, गो-रक्षार्थ तथा ब्रह्मचारियों के निर्माण में अन्न-धन का सहयोग कर पुण्य के भागी बनें।

19 वें स्थापना दिवस एवं वार्षिकमहोत्सव दिनांक 31 मई, 1, 2 जून 2019 को आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

निवेदक

श्री धर्मपाल आर्य	श्री सुखवीर सिंह आर्य	स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
प्रधान	संयोजक एवं मन्त्री	संचालक एवं संस्थापक
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली प्रदेश		गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

❖ ओ३म् ❖

आर्ष-ज्योतिः

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष-महाविद्यालय-न्यास

का

द्विभाषीय मासिक मुखपत्र

वैशाख-ज्येष्ठमासः, विक्रमसंवत्-२०७६/ मईमासः-२०१९, सृष्टिसम्वत्-१,९६,०८,५३,१२०

वर्षम् - १० :: अङ्कः - १३१ मूल्यम्- रु. ५ प्रति, वार्षिकम्-५०

❖संरक्षकाः❖

स्वामी प्रणवानन्दः सरस्वती

कै. रुद्रसेन आर्यः

प्रो.पीयूषकान्तदीक्षितवर्याः

श्रीगिरीश-अवस्थीवर्याः

❖परामर्शदातृमण्डलम्❖

डॉ. रघुवीरवेदालङ्कारः

प्रो. महावीरः

आचार्ययज्ञवीरवर्याः

श्रीचन्द्रभूषणशास्त्री

❖मुख्यसम्पादकौ❖

डॉ. धनञ्जय आर्यः

डॉ. रवीन्द्रकुमारः

❖कार्यकारी सम्पादकः❖

ब्र. शिवदेवार्यः

❖व्यवस्थापकौ❖

ब्र. अनुदीपार्यः

ब्र. कैलाशार्यः

❖कार्यालयः❖

श्रीमद्दयानन्द-आर्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुलम्

दूनवाटिका-२, पौन्धा,

देहरादूनम् (उत्तराखण्डः)

दूरवाणी-०९४११११०६१०४, ८८१०००५०९६

website: www.pranwanand.org

E-mail : arsh.jyoti@yahoo.in

विषय-क्रमणिका

विषयः	पृष्ठः
अथार्य्याभिविनयः	२
सम्पादकीय	३
निमन्त्रण-पत्रम्	५
भारत में उत्पन्न सब लोगों को देश की उन्नति...	१०
वैदिक वाङ्मय में शिक्षा-विज्ञान	१३
महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-विज्ञान	१६
योगदर्शनशिक्षणम्	१९
प्रो. महावीर अग्रवाल व डॉ. रघुवीर वेदालङ्कार...	२०
संस्कृतशिक्षणम्	२३

चलो, चलें गुरुकुल पौन्धा...

31 मई, 1 एवं 2 जून 2019 शुक्र, शनि, रवि को गुरुकुल पौन्धा, देहरादून का १९ वाँ वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है,

आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

प्रकाशनतिथि-३ मई २०१९ :: डाकप्रेषणतिथि-८ मई २०१९

ओ३म् तत् सत् परब्रह्मणे नमः

अथार्य्याभिविनयः

(३)

ऋषिः- मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**- अग्निः। **छन्दः**-निचृद्गायत्री। **स्वरः**- षड्जः।

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि। तवेतत्सत्यमङ्गिरः॥ ऋग्वेद १/१/६॥

यत्। अङ्ग। दाशुषे। त्वम्। अग्ने। भद्रम्। करिष्यसि। तव। इत। तत्। सत्यम्। अङ्गिरः॥

अन्वयः-

हे अङ्गिरोऽअङ्गाग्ने! त्वं यस्मात् दाशुषे भद्रं करिष्यसि करोषि, तस्मात्तवेत्तवैवेदं सत्यं व्रतमस्ति॥

पदार्थः-

(यत्) यस्मात् **(अङ्ग)** सर्वमित्र **(दाशुषे)** सर्वस्वं दत्तवते **(त्वम्)** मङ्गलमयः **(अग्ने)** परमेश्वर **(भद्रम्)** कल्याणं सर्वैः शिष्टैर्विद्वद्भिः सेवनीयम्। **भद्रं भगेन व्याख्यातं भजनीयं भूतनामभिद्रवयतीति वा भाजनवद्वा।** (निरुक्त ४.१०) **(करिष्यसि)** करोषि। अत्र **वा छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति** इति लडर्थे लृट्। **(तव इत्)** एव **(तत्)** तस्मात् **(सत्यम्)** सत्सु पदार्थेषु सुखस्य विस्तारकं सत्प्रभवं सद्भिर्गुणैरुत्पन्नम् **(अङ्गिरः)** पृथिव्यादिनां ब्रह्माण्डस्याङ्गानां प्राणरूपेण शरीरावयवानां चान्तर्य्यामिरूपेण रसरूपोऽङ्गिरास्तत्सम्बुद्धौ। **प्राणो वा अङ्गिराः।** (श०ब्र० ६.३.७.३) **देहेऽङ्गारेष्वङ्गिरा अङ्गारा अङ्कना अञ्चनाः।** (निरुक्त ३.१७) अत्राप्युत्तमानामङ्गानां मध्येऽन्तर्यामी प्राणाख्योऽर्थो गृह्यते॥

आर्याभिविनयः-

हे (अङ्ग) मित्र! (दाशुषे) जो आपको आत्मादि दान करता है, उसको (भद्रम्) व्यावहारिक और पारमार्थिक सुख (करिष्यसि) अवश्य देते हो, हे (अङ्गिरः) प्राणप्रिय! (तवेत्तत्सत्यम्) यह आपका सत्यव्रत है कि स्वभक्तों को परमानन्द देना। यही आपका स्वभाव हमकों अत्यन्त सुखकारक है। आप मुझको ऐहिक और पारमार्थिक इन दोनो सुखों का दान शीघ्र दीजिए। जिससे सब दुःख दूर हो हमको सदा सुख ही रहें।।

संस्कृताभिविनयः-

हे मित्र! यो भवते आत्मदानादिङ्करोति तस्मै भवान् व्यावहारिकं पारमार्थिकञ्च सुखं प्रयच्छति। हे प्राणप्रिय! भवत एतत्सत्यव्रतं वर्तते यत् स्वभक्तेभ्यः परमानन्दं प्रदेयम्। अयमेव भवत्स्वभावस्सुतराम् सुखयति। भवाता मह्यमैहिकं परामार्थिकञ्चेतत्सुखद्वयं शीघ्रं प्रदीयताम्। येन सर्वाणि दुःखानि दूरीभवन्तु, वयं च सर्वदा सुखिनः स्याम॥६॥

विमर्शः-

भद्रम् - इत्यत्र **स्फायितञ्चिवञ्चि०** (उणादि० २.१३) इति रक्। **अङ्गिरः**- इत्यत्र **अङ्गिराः** (उणादि० ४.२३६) इति निपात्यते॥

- शिवकुमार,
गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

सम्पादक की कलम से...

गुरुकुलीय परम्परा....

'सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा' यह वैदिक संस्कृति विश्व की प्रथम संस्कृति है। इस संस्कृति का प्रत्येक अंग, कार्य व परम्परा पूर्णत: वैज्ञानिक, तर्कसंगत तथा वेदोक्त है। वैदिक संस्कृति जीवन को आनन्दित करने का एक साधन है। यह संस्कृति यथार्थ में जीवन जीना सिखलाती है। एक-दूसरे के प्रति अपने कर्तव्यों को बताती है। **'पुमान् पुमान्सं परिपातु विश्वत:'** अर्थात् प्रत्येक मनुष्य एक-दूसरे की रक्षा करने वाला बने। **'सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु'** अर्थात् समस्त दिशाओं में मेरे मित्र हो, मेरा कोई शत्रु न हो। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य वैदिक संस्कृति की दृढ़ता तथा महत्ता को सर्वत्र दिग्दर्शित कराता है। उदात्तभावों वाली इस वैदिक संस्कृति की आत्मा संस्कृत में बसती है। संस्कृत भाषा ही भारतीय परम्परा एवं सभ्यता को अपने में समाविष्ट की हुई है।

ऋषिवर देव दयानन्द ने समाज को जो दिशा व दशा दी, वो अद्वितीय है। अभी लोगों ने उस दयानन्दीय पथ का अनुसरण करना प्रारम्भ ही किया था कि ऋषिवर अपनी अग्रिम यात्रा के लिए अग्रसर हो गये। सन् १८८३ की कार्तिक अमावस्या, दिन मङ्गलवार को सांयकाल ६ बजे वह दिव्य ज्योति जिसने मनुष्यों को मुक्तिमार्ग के लिए प्रशस्त किया, सहसा बुझ गई। इस दु:खद समाचार से सर्वत्र निराशा ही निराशा फैलने लगी। जो उत्साह व उमंग लोगों में थी, वह अब शनै:-शनै: क्षीण होने लगी, पुन: संसार को पाखण्ड रूपी बादलों ने आकर ढ़क लिया। कोई भी इन बादलों को हटाने का साहस न कर सका।

जिसका स्वामी सत्यानन्द जी ने श्रीमद् दयानन्द प्रकाश में इस प्रकार विवेचन किया है-

'आर्यसमाजियों के हृदय कई दिनों और मासों तक डगमगाते रहे। उनके मनों में निराशा का घर बना रहा। उनके चित्तों का उत्साह भग्न हो गया, उनके साहस का कहीं ठौर-ठिकाना न रहा। वे अपने को जहाँ-तहाँ निस्सहाय और निरावलम्ब पाते थे। परन्तु थोड़े ही मासों के अन्तर में आर्यों की आशा लता में तप्त ताम्रवर्ण सुकोमल कोंपल निकल आई, उनकी सेवक सेना के सुचतुर संचालक सेनापति का काम करने लग गए। वे जगद्गुरु की जगाई जोत को जी-जान से बचाए रखने में प्रयत्नशील हो गए।'

आर्ष परम्परा व ऋषि गौरव को पुनर्स्थापित करने के लिए ऋषि परम्परा के अनन्य संवाहक स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने हरिद्वार में सन् १९०२ में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती में रचनात्मक जिजीविषा कूट-कूट कर भरी हुयी थी। मनोबल प्रबल व आत्मविश्वास से भरपूर था, इन सबके पीछे स्वामी दयानन्द की प्रेरणा थी। युवावस्था में ऋषिवर से साक्षात्कार कर देश व समाज के हाल को उन्होंने पूर्णतया जान लिया था और निश्चय किया कि यदि समाज को कोई सुधार सकता है तो वो गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली ही है।

ऋषिवर ने अपने तीन ग्रन्थों सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि तथा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणली का पर्याप्त वर्णन किया है किन्तु इस विचारधारा को कार्यरूप में परिणत स्वामी दयानद के अनन्य भक्त स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने गुरुकुल काङ्गड़ी की स्थापना की। गुरुकुलीय परम्परा का गौरव गुरुकुल काङ्गड़ी के स्थापनाकाल से ही सर्वत्र प्रचारित व प्रसारित होने लगा। मोहनदास कर्मचन्द गांधी ने इस अभिनव

प्रयोग का दर्शन कर टिप्पणी प्रस्तुत की – **'पहाड़ जैसे विशाल दीखने वाले महात्मा मुंशीराम के दर्शन करने और उनका गुरुकुल देखने जब मैं गया तब मुझे बहुत शान्ति मिली। हरिद्वार के कोलाहल और गुरुकुल की शान्ति का भेद स्पष्ट दिखाई देता था।'**

स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित स्वातन्त्र्योन्मुख वैदिक एवं भारतीय शिक्षा प्रणाली की प्रयोगशाला गुरुकुल कांगड़ी ने भारतीय स्वन्त्रता संग्राम में अपनी अद्वितीय भूमिका प्रस्तुत की। आज हमें सर्वत्र गुरुकुलों के ही विद्वान् स्नातक दिखायी देते हैं।

सचमुच गुरुकुल एक ऐसी उर्वरा भूमि है, जिसमें यदि कुछ भी बोया जाये तो वह बहुत ही शीघ्रता से बढ़ने लगता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी के इस अभिनव प्रयोग को ही केन्द्रित कर स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती जी ने ३० जून १९०७ में गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की स्थापना की। इसके पश्चात् १९१५ में गुरुकुल झज्जर (हरियाणा) की स्थापना हुयी इसी क्रम में अनेक गुरुकुल खुलते चले गये।

सन् १९३४ में आचार्य राजनाथ शास्त्री ने श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय की स्थापना की, जिससे अनेक आर्ष परम्परा के विद्वान् तैयार हुये, जिसमें स्वामी ओमानन्द सरस्वती अपने समय में शीर्षस्थ विद्वानों में माने जाते थे, उन्हीं स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने सन् १९४२ की दीपावली को गुरुकुल झज्जर का जीर्णोद्धार कर सुसञ्चालन किया। तथा गुरुकुल झज्जर में आर्ष परम्परा से अधीत स्वामी ओमानन्द सरस्वती के प्रिय शिष्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती (पूर्वनाम – आचार्य हरिदेव) ने सन् १९७९ में श्रद्धेय स्वामी सच्चिदानन्द (पूर्वनाम – आचार्य राजेन्द्रनाथ शास्त्री) तथा स्वामी ओमानन्द सरस्वती की प्रेरणा से दयानन्द वेद विद्यालय का संचालन सुचारु रूप से प्रारम्भ किया।

आज यही दयानन्द वेद विद्यालय श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास की शाखा के रूप में प्रगति करता हुआ देशभर में आठ गुरुकुलों का सञ्चालन श्रद्धेय स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती के नेतृत्व में कर रहा है।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने इस परम्परा को ही अपना जीवन स्वीकार किया और निश्चय किया कि यदि सर्वत्र आर्षपरम्परा के गुरुकुल ही गुरुकुल हो तो निश्चयेन पाखण्ड का पतन एवं अविद्या, अन्धकार का विनाश यथाशीघ्र हो सकेगा। इस दृढ़ धारणा के कारण श्रद्धेय स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती आज के विषम वातावरण में आर्ष परम्पराओं के गुरुकुलों का सफल सञ्चालन कर रहे हैं।

श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष न्यास की द्वितीय शाखा के रूप में १९९४ में गुरुकुल यमुनातट मंझावली जिला-फरीदाबाद (हरियाणा) को स्थापित कर आर्ष परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं। आज के दिन यह गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक का एक प्रमाणिक केन्द्र के रूप में सञ्चालित हो रहा है। जिसमें प्रति वर्ष लगभग ४०० से ५०० छात्र विभिन्न गुरुकुलों से आकर आर्ष पाठ्यक्रम से परीक्षा देते हैं। वर्तमान में इस संस्था के आचार्यपद पर स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती के शिष्य श्री जयकुमार जी कार्यरत हैं। ये योग्य विद्वान् व सुव्यवस्थापक हैं। यह गुरुकुल दिनोंदिन उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रहा है। गुरुकुल से अधीत स्नातक वर्तमान में समाज की अनेक धाराओं से जुडे हुऐ हैं। यह गुरुकुल यज्ञ-आध्यात्मक्षेत्र के लिए सुप्रसिद्ध है। इस गुरुकुल में तीन बार सवॉ करोड़ गायत्री का यज्ञ तथा अनेकों बार सवॉ लाख गायत्री यज्ञों के अनुष्ठान के साथ-साथ चतुर्वेदब्रह्मपारायण महायज्ञों का भी आयोजन किया गया है। तथा विरक्त लोगों के लिए एक बहुत ही पवित्र साधनास्थली के रूप में विकसित हो रहा है। इस समय इस गुरुकुल में भव्य भवनों के साथ-साथ २४ साधना

कुटीर बने हुये हैं।

४ जून २००० को श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा, देहरादून को स्थापित कर स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने अपने शिष्य आचार्य डॉ. धनञ्जय जी व चन्द्रभूषण जी को कार्यभार प्रदान किया। यह गुरुकुल स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के आशीर्वाद को प्राप्त कर शस्त्र व शास्त्र के क्षेत्र में निरन्तर प्रगति को प्राप्त कर रहा है। विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, विद्यालयों तथा सेनाओं में यहाँ के विद्यार्थी सेवारत हैं। गुरुकुल के स्नातक दीपक कुमार ने २०१८ में जकार्ता में आयोजित एशियन गेम में रजत पदक प्राप्त कर देश का नाम रोशन किया है। तथा उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार द्वारा संञ्चालित अपने निजी पाठ्यक्रम के अतिरिक्त आचार्य डॉ. धनञ्जय के पुरुषार्थ एवं स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती के आशीर्वाद से उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय में सन् २०१३ को आर्ष पाठ्यक्रम आरम्भ हुआ। तथा विश्वविद्यालय द्वारा पूरे उत्तराखण्ड में ४५ महाविद्यालय परम्परागत ढ़ंग से सञ्चालित हैं, उसी क्रम में ४६ वाँ महाविद्यालय श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा, देहरादून है। जो कि विश्वविद्यालय की दृष्टि में सभी महाविद्यालय से सर्वोत्तम माना गया है।

सन् २००३ में गुरुकुल नरसिंहनाथ पाईकमाल, जिला-बरगड़ (उड़ीसा) को स्थापित कर स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने अपने शिष्य आचार्य बुद्धदेव को आचार्य के रूप में स्थापित किया। इस गुरुकुल को स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती तथा स्वामी जी के शिष्य पं. नरदेव यजुर्वेदी जी का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त हो रहा है। आदिवासी क्षेत्र के लिए यह गुरुकुल पूर्णतः समर्पित होकर कार्य कर रहा है।

सन् २००८ में आर्ष कन्या गुरुकुल देवनगर, घुचापाली, जिला-बरगड़ (उड़ीसा) को स्थापित कर स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने अपनी शिष्या आचार्या शारदा जी तथा आचार्य आनन्त को आचार्या के रूप में कार्यभार दिया। यह गुरुकुल भी आदिवासी क्षेत्र में कार्य कर निरन्तर उन्नति को प्राप्त कर रहा है।

सन् २००७ श्रीकृष्ण आर्ष गुरुकुल देवालय, गोमत, अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश) को स्थापित कर स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने गुरुकुल पौन्धा के स्नातक अरविन्द कुमार को आचार्य बनाया तथा वर्तमान में स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती गुरुकुल का कार्यभार संभाल रहे हैं।

यह गुरुकुल पौराणिक बाहुल्यक्षेत्र में स्थापित है। श्रीकृष्ण के मन्दिर को गुरुकुल का स्वरूप प्रादान कर एक अद्वितीय कार्य का आरम्भ किया गया है। यहाँ से अधीत ब्रह्मचारी देश के विभिन्न स्थानों पर कार्यरत हैं।

सन् २०१० में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने पण्डित लेखराम आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, वेल्लीनेझी, जिला-पालक्काट (केरल) की स्थापना कर आचार्य हीरा प्रसाद को आचार्य के रूप में कार्यभार दिया। यह गुरुकुल मुस्लिमबाहुल्य क्षेत्र में स्थित है, इस गुरुकुल के माध्यम से गुरुकुल के समीपस्थ लोगों को वैदिक संस्कृति से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

इन गुरुकुलों से भिन्न अनेक गुरुकुलों की स्थापना व सञ्चालन पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी द्वारा किया जा रहा है।

गुरुकुलों की इस परम्परा ने राष्ट्र को बहुत से स्नातक विद्वान् दिये, जो राष्ट्रहित के लिए सर्वदा समर्पित हैं, ये परम्परा अभी भी अग्रसर है, पूर्व स्नातक इस परम्परा के तने तथा आप सभी सहयोगी खाद-पानी हैं।

गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति संस्कृत एवं संस्कृति की ध्वजवाहक है। गुरुकुल ऐसा कुल है, जिसमें पहुँचकर बालक (छात्र) अपने सम्पूर्ण कष्टों(बुराईयों) से मुक्त होने की शिक्षा प्राप्त कर सके तथा जीवन मुक्त होने की विद्या प्राप्त करे। आचार्य अर्थात् गुरु **आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः। तं रात्रीस्तिस्र उदरे**

बिभर्ति तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवा:॥ इस अथर्ववेदीय मन्त्रानुसार बालक को शिक्षा देने के लिए स्वीकार करते हुए इस प्रकार सुरक्षित, संभाल कर रखता है जैसे माता पुत्र को अपने गर्भ में सुरक्षित संरक्षित कर रखती है तथा **'मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तम् अनुचित्तं ते अस्तु'** अर्थात् तेरे हृदय को मैं अपने हृदय में लेता हूँ, तेरे चित्त को अपने चित्त में धारण करता हूँ इस प्रकार का संकल्प लेकर बालक का सर्वांगीण विकास करता है। गुरु जो सदैव शिष्य का हित चिन्तन करते हुए शिष्य को उद्बुद्ध करता हुआ श्रेष्ठता की ओर ले जाता है, ऐसे गुरु का कुल गुरुकुल है। गुरुकुलीय आर्ष शिक्षा पद्धति स्वयं तक ही सीमित नहीं रहती अपितु **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की भावना से ओतप्रोत है तथा **'सर्वजनहिताय सर्वजनसुखाय'** एवं **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** का लक्ष्य प्रदान करती है।

गुरुकुलीय प्रणाली एक ऐसा दर्पण है, जिसमें भारतीय संस्कृति का स्पष्ट और यथार्थ प्रतिबिम्ब दिखायी देता है। इसके प्रमुख तत्व - आस्तिकता, वेद, विज्ञान, सदाचार, राष्ट्रवाद और समाजवाद हैं। यह गुरुकुलीय संस्कृति है जो किसी न किसी रूप में गुरुकुल शब्द के पीछे श्रद्धा और सम्मान की भावना को बनाये हुए हैं।

आज भी लोग बहुत ही आशा की दृष्टि से गुरुकुलीय प्रणाली को देख रहें हैं, आज इस गुरुकुलीय प्रणाली का महत्त्व पूर्व की अपेक्षा कहीं गुना अधिक है। हमारी शिक्षा अपने सम्पूर्ण अर्थों का भान इसी गुरुकुलीय प्रणाली से कर पाती है। यही वह शिक्षा है जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने का कार्य करती है।

वर्तमान पाश्चात्य के अन्धानुकरण में अपनी संस्कृति, सभ्यता, संस्कार एवं संस्कृत भाषा का संरक्षण करना अनिवार्य है। यह बात सर्वथा स्मरणीय है कि यदि किसी वृक्ष को सर्वथा विनष्ट करना है तो उसे समूल नष्ट करो। गुरुकुलीय आर्ष शिक्षा पद्धति भारतीय संस्कृति का मूल है। आज भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत को विनष्ट करने का षड़यन्त्र चारों दिशाओं से हो रहा है। हमारा कर्तव्य है कि यथा सामर्थ्य अपनी संस्कृति को बचाने का प्रयास करें।

श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा, देहरादून ऐसी ही परम्परा को आप सबके सहयोग से अपने अस्तित्व को स्थापित किये हुए १९ वाँ वर्ष पूर्ण कर रहा है, जिस परम्परा ने पौराणिक व पाश्चात्य परम्पराओं को भी अपना लोहा मनवाने पर मजबूर कर दिया। आप सभी ऐसी परम्परा के सम्पोषक हैं। आईये! गुरुकुल पौन्धा, देहरादून को अपना आशीर्वाद प्रदान करें। ***३१ मई, १ एवं २ जून २०१९ को १९ वाँ वार्षिकोत्सव तथा चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है,*** आप परिवार व इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

वार्षिक महोत्सव के इस शुभ अवसर पर **आचार्य** I kena 'kkL=ht h के आचार्यत्व में ***२७ मई से ३१ मई २०१९ तक पञ्चमहायज्ञविधि का अध्ययन शिविर*** *तथा* ***पूज्य स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी*** *के मार्गदर्शन में ध्यान का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा।* आपके आगमन की प्रतीक्षा में...

- आचार्य डॉ. धनञ्जय
गुरुकुल-पौन्धा, देहरादून

आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा-८० जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त होगा।
शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त सं किर (अथर्व.-३/२४/५)
सैकड़ों हाथों से इकट्ठा करो और हजारों हाथों से दान करो।

पावका नः सरस्वती

॥ निमन्त्रण-पत्रम् ॥

श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय (न्यास)

११९ गौतमनगर, नई दिल्ली-११००४९ द्वारा सञ्चालित शाखा नं.-३

श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल

आर्यपुरम्, दून वाटिका, भाग-२, पौन्धा, देहरादून (उत्तराखण्ड)

का

त्रिदिवसीय वार्षिकमहोत्सव एवं स्थापना दिवस समारोह तथा चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

ज्येष्ठ सुदी द्वादशी, त्रयोदशी एवं चतुर्दशी विक्रम संवत् २०७६, सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१२०

तदनुसार 31 मई एवं 1, 2 जून 2019 शुक्र, शनि, रविवार को

विभिन्न सम्मेलनों के साथ आयोजित किया जा रहा है,

आप इष्ट मित्रों सहित सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं...

स्वाध्याय एवं योग-साधना

27 मई से 31 मई 2019 तक **पञ्चमहायज्ञविधि** का अध्ययन **डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई)** के आचार्यत्व में किया जायेगा। **पूज्य स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी** के मार्गदर्शन में ध्यान का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा। संयोजक - **श्री सुखवीर सिंह आर्य** (दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा)

बालसंस्कार एवं प्रवेश-शिविर

बालसंस्कार एवं प्रवेश-परीक्षा शिविर **2 जून 2019 से 9 जून 2019 तक** आयोजित किया जा रहा है। शिविर में वैदिक सिद्धान्त, बौद्धिक विकास, व्यक्तिगत निर्माण आदि विषयों की परिचर्चा के साथ-साथ योगासन एवं अन्य भारतीय व्यायाम का प्रशिक्षण दिया जायेगा।

सम्पर्क सूत्र :- (देहरादून) 9411106104, 7900656649, 9411310530
(दिल्ली) 011-26525663, 9868855155, 9810420373

॥ निमन्त्रण-पत्रम् ॥

आप सबको यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि हिमालय की गोद में, पर्वतमाला से परिवेष्टित देहरादून के निकट पहाड़ों की रानी मसूरी की तलहटी में, प्राचीन ऋषि-मुनियों द्वारा सुसेवित समुद्र के टापू के सदृश शोभायमान विशाल भूखण्ड में स्थापित श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल का **19 वाँ स्थापना दिवस एवं वार्षिकोत्सव तथा चतुर्वेद पारायण महायज्ञ दिनाङ्क 31 मई, 1 एवं 2 जून 2019 (शुक्रवार, शनिवार और रविवार)** को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। समस्त कार्यक्रमों में आप इष्टमित्रों सहित सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

ब्रह्मा-डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई)।
ध्वजारोहण-श्री विजय आर्य (किरतपुर)।
सान्निध्य-श्री विद्यामित्र ठुकराल।
विशिष्ट अतिथि-ठा. विक्रम सिंह।

यजमान- श्री अनुव्रत वर्मा, श्री कृष्णमुनि वानप्रस्थ, श्री सूरज गोयल (दिल्ली), श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, श्री योगेश पुरी, श्री भुवनेश अरोड़ा, डॉ. सत्येन्द्र आर्य, माटा परिवार, सचदेवा परिवार, सिकरिया परिवार, श्री राजीव माहेश्वरी, श्री विनय आर्य (मोदीनगर), श्री शिवकुमार मदान (जनकपुरी), श्री नेपाल सिंह कसाना (नोएडा), श्री राजेन्द्र काम्बोज, श्री राजेश गुप्ता (प्रेमनगर), श्री राजीव अरोड़ा, श्रीमती रंजिता तोमर (प्रमुख), श्रीमती रानी (ग्रामप्रधान), श्री नरेन्द्र कुटाल, श्रीमती अरुणा गुप्ता, श्री ज्ञानचन्द्र गुप्त, श्री हर्षवर्धन आर्य, श्री आदित्य आर्य, श्री राजकुमार टांक, श्री इन्दुबाला, श्रीमती पुष्पा गुसांई, श्रीमती सुखदा सोलंकी, माता कृष्णा ठुकराल, माता पुष्पलता आर्या, माता विद्या छाबड़ा, श्रीमती रविला गुप्ता, श्रीमती सुनीता खोसला, माता आशा वर्मा, श्रीमती बीना साही, श्री ईश्वर दयालु आर्य, श्री दयानन्द आर्य (डोभरी), श्री सुभाष जसौरिया, श्री अंकित अग्रवाल, श्री रमेशदत्त (प्रेमनगर), श्री कृष्णकुमार आर्य, श्री विजय नागर, श्री धर्मपाल खुराना, श्री जगतसिंह आर्य, श्री पवन सिंह आर्य, श्री मनमोहन आर्य, कर्नल रामकुमार आर्य, श्री अशोक आर्य (राजपुरा), श्री अखिलेश 'खरे', श्री चन्द्रगुप्त विक्रम, श्री चमन लाल शास्त्री (भागसी), मा. लाल सिंह आर्य, श्री नरेश वर्मा, श्री यज्ञदत्त शर्मा, श्री महेन्द्र सैनी(नारायणगढ़), श्री जयप्रकाश चौहान, चौ. विनय कुमार, श्री जितेन्द्र सिंह राणा, श्री कुलदीप स्वेडिया, श्री संजय अग्रवाल, श्री ललित नेहरा, श्री कपिल आर्य, श्री अवधेश आर्य, श्री अमरनाथ शास्त्री।

आत्मीय निवेदन- याज्ञिक पुरुष धोती, कुर्त्ता तथा महिलाएँ साड़ी पहनें। यज्ञीय वस्त्र यदि केसरी रंग का हो तो उत्तम है।

आशीर्वाद

समारोहाध्यक्ष - लाला दीनदयाल गुप्त (अधिपति, डॉलर बनियान)।

मुख्य अतिथि - कै. रुद्रसेन (प्रसिद्ध समाजसेवी)।

उद्बोधन - स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी धर्मेश्वरानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, डॉ. वेदप्रकाश श्रोत्रिय, डॉ. रघुवीर वेदालङ्कार, डॉ. पूर्ण सिंह डबास, डॉ. ज्वलन्त कुमार, प्रो. महावीर अग्रवाल, प्रो. रुपकिशोर शास्त्री, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, डॉ. आनन्द कुमार (IPS), प्रो. देवी प्रसाद त्रिपाठी (कुलपति), श्री गिरीश कुमार अवस्थी (कुलसचिव), आचार्य यज्ञवीर,

स्वामी यतीश्वरानन्द (विधायक), श्री सहदेव सिंह पुण्डीर (विधायक), श्री चन्द्रभान आर्य (अमेरिका), आचार्य ओमप्रकाश (गुरुकुल आबूपर्वत), श्री धर्मपाल (आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट), पं. धर्मपाल शास्त्री (मेरठ), डॉ. कृष्णकान्त वैदिक, डॉ. विनोद कुमार शर्मा, आचार्या अन्नपूर्णा, आचार्या कल्पना, आचार्या शारदा, श्री नारायण सिंह राणा, श्री वीरेन्द्र शास्त्री, श्री रामपाल शास्त्री, पं. रुहेलसिंह आर्यवीर, श्री सुखवीर सिंह वर्मा, श्री प्रेमप्रकाश शर्मा, श्री वेदवसु शास्त्री, श्री उमेद सिंह विशारद, माता विमला, श्री ओममुनि वानप्रस्थ, महाशय मलखान सिंह, श्री चतर सिंह वैदिक, आचार्य जयकुमार, आचार्य बुद्धदेव, आचार्य हीरा प्रसाद, पं. रणजीत शास्त्री, पं. विद्यापति शास्त्री।

भजनोपदेश - पं. ओमप्रकाश वर्मा, पं. नरेशदत्त आर्य (बिजनौर), पं. कैलाश कर्मठ,कु. निकिता शास्त्री।

संयोजक - डॉ. रवीन्द्र कुमार, डॉ. अजीत कुमार।

कार्यक्रम विवरण

दिनाङ्क : 31 मई 2019 (शुक्रवार)

उद्घाटन सत्र, यज्ञोपासना एवं ध्वजारोहण	प्रातः	07:00 बजे से
धर्मोपदेश विषय : ईश्वर-उपासना क्यों और कैसे?	पूर्वाह्न	10:30 बजे से
यज्ञोपासना एवं सम्मेलनविषय : धर्म का यथार्थ स्वरूप	अपराह्न	03:30 बजे से
धर्मोपदेश एवं भजन	रात्रि	08:00 बजे से

दिनाङ्क : 1 जून 2019 (शनिवार)

यज्ञोपासना एवं धर्मोपदेश	प्रातः	07:00 बजे से
कै. रुद्रसेन जी द्वारा विद्यालयभवन का उद्घाटन	प्रातः	09:00 बजे
धर्मोपदेश विषय : मानव निर्माण में संस्कारों की भूमिका	पूर्वाह्न	10:30 बजे से
यज्ञोपासना एवं सम्मेलनविषय : वैदिक समाजवाद	अपराह्न	03:30 बजे से
धर्मोपदेश एवं भजन	रात्रि	08:00 बजे से

दिनाङ्क : 2 जून 2019 (रविवार)

यज्ञोपासना एवं पूर्णाहुति	प्रातः	07:00 बजे से
गुरुकुल सम्मेलन	पूर्वाह्न	10:30 बजे से
व्यायाम सम्मेलन	अपराह्न	12:30 बजे से

प्रीतिभोज - माटा परिवार के सौजन्य से

आपके आवास-निवास एवं भोजनादि की समुचित व्यवस्था आप आर्य सज्जनों के सहयोग से गुरुकुल परिसर में ही रहेगी। **वेद विद्या, संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार, ऋषि-लङ्गर, गो-रक्षार्थ तथा ब्रह्मचारियों के निर्माण में सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। न्यास को दिया गया दान धरा ८० जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।**

-:: निवेदक ::-

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

संस्थापक

भारत में उत्पन्न सब लोगों को देश की उन्नति तन, मन व धन से करनी चाहिये

❑ मनमोहन कुमार...

हम बहुधा देखते कि कुछ स्वदेशवासियों व संस्थाओं में स्वदेश भक्ति कम है अथवा नहीं है। देश और मातृभूमि को सबसे ऊंचा व बड़ा नहीं माना जाता। ऐसे भी लोग हैं जो विदेशी मत–मतान्तरों व उनके अनुसार जीवन जीने में ही अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं। ऐसे लोगों का आचार, विचार व व्यवहार विदेशी लोगों के समान देखा जाता है। यहां तक देखने में आता है कि बहुत से लोगों ने अपने खान–पान व विवाह आदि के नियम भी विदेशी लोगों का अंधानुकरण कर उनके अनुरूप बना लिये हैं। ऐसे लोगों में अधिकांश अपने देश के ज्ञानवान व मानवता के पुजारी ऋषि–मुनि आदि पूर्वजों की प्रशंसा तो क्या करेंगे अपितु उसके स्थान पर इनकी पेट भर कर निन्दा करते हैं। ऐसे लोगों को यूरोप आदि देशों के लोग व उनके मिथ्या आचार–विचार भी भारत के महर्षियों के मानवता के हितकारी नियमों से अधिक अच्छे लगते हैं और यह उनकी दिल भर कर प्रशंसा करते हैं। इनका भ्रम व मिथ्या विश्वास है कि आर्यावर्तीय लोग सदा से मूर्ख चले आये हैं। इन लोगों को वेदों, दर्शन एवं उपनिषद आदि ग्रन्थों का कोई ज्ञान नहीं होता परन्तु विदेशी लोगों की देखा देखी इन सत्य शास्त्रों की प्रशंसा छोड़कर निन्दा करने में प्रवृत्त रहते हैं। ऐसे आचार–विचारों की समालोचना करते हुए महर्षि दयानन्द जी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में लिखते हैं कि भला जब आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुए हैं, इसी देश का अन्न–जल खाया पीया, अब भी खाते–पीते हैं, तब अपने माता–पिता–पितामह के मार्ग को छोड़ दूसरे विदेशी मतों पर अधिक झुक जाना, इस देश की संस्कृत विद्या से रहित होने पर भी अपने को विद्वान प्रकाशित करना, अंग्रेजी आदि पढ़कर पण्डिताभिमानी होकर अविवेकपूर्वक व्यवहार करना मनुष्यों का स्थिर और वृद्धिकारक काम क्योंकर हो सकता है?

जापान, चीन, रूस, अमेरिका व इंग्लैण्ड आदि देशों के लोगों को देखते हैं तो उनमें स्वदेशभक्ति का गुण समग्रता कड़ी दृष्टि से शायद हमसे अधिक दिखाई देता हैं। वहां जो दूसरे देशों के लोग रहते हैं वह भी उन देशों के नियमों व आचार विचारों का पालन करते हैं परन्तु भारत में ऐसा देखने में नहीं आता। इन बातों पर विचार करने पर हमें लगता है कि यह वेदों व प्राचीन भारतीय संस्कृति के संस्कारों के न होने के कारण होता है। जो व्यक्ति जिस देश में उत्पन्न हुआ है उसे वहां के पूर्वजों की परम्पराओं व ज्ञान एवं दर्शन का सूक्ष्मता से अध्ययन करना चाहिये। विदेशी मतों व स्वदेश के धार्मिक व सांस्कृतिक ज्ञान व परम्पराओं का अध्ययन भी करना चाहिये और सत्य को अपनाना व असत्य का त्याग करना चाहिये। हमारे देश में न तो ऐसे नियम बनाये गये हैं और न इसके प्रति जागृति ही देखने को मिलती है। सभी लोग आज कल सुख सुविधाओं और भोग प्रदान संस्कृति ड्रिंक, ईट एण्ड बी मैरी को महत्व देते हैं। वह भूल जाते हैं कि ड्रिंक एण्ड ईट उनके हाथ में है परन्तु इसका परिणाम बी मैरी उनके अपने हाथ में नहीं है। इस विचारधारा का परिणाम अधिक महत्वाकांक्षी होना, दुःख, रोग व अल्पायु आदि के रूप में सामने आता है।

सबसे उत्तम मनुष्य वह होता है जो बहुपठित हो और प्राचीन ग्रन्थों का आलोचनात्मक अध्ययन करता हो। यह सत्यासत्य का निर्णय करने के लिये आवश्यक है। जिस मनुष्य ने अन्य ग्रन्थों के अलावा वेद, दर्शन, उपनिषद, सत्यार्थप्रकाश, प्रक्षेपरहित मनुस्मृति सहित शुद्ध रामायण एवं शुद्ध महाभारत आदि ग्रन्थों को भी पढ़ा है, वही विवेकी बन सकता है। इन ग्रन्थों के अध्ययन से ही मनुष्य सत्य व असत्य को जान सकता है। स्कूली किताबों व ज्ञान–विज्ञान को पढ़कर मनुष्य विद्वान व विवेकी मनुष्य नहीं बनता। इसके लिये स्वाध्याय अत्यन्त आवश्यक है। यदि कोई अधिक ग्रन्थ न पढ़ सके तो उसे सृष्टि विषयक तथ्यों एवं अपने कर्तव्यों के ज्ञान के लिये सत्यार्थप्रकाश तो पढ़ना ही चाहिये। यदि पूरा न पढ़ सके तो इस ग्रन्थ के आरम्भ के दस या ग्यारह समुल्लास तो अवश्य ही पढ़ने चाहिये। इसके बाद वह आगे पढ़कर अन्य विद्या–अविद्यायुक्त मतों का अध्ययन भी कर सकता है और अपनी विवेक बुद्धि से सभी मतों के गुण व दोषों का निर्णय कर सकता है। जहां तक ईश्वर व जीवात्मा विषयक सत्य ज्ञान का प्रश्न है वह तो केवल वेद, उपनिषद, दर्शन, सत्यार्थप्रकाश, आर्याभिविनय, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थों को पढ़कर ही प्राप्त होता है। इसके साथ ही मनुष्य को विशिष्ट विद्वानों के भिन्न–भिन्न विषयों पर व्याख्यान भी सुनने चाहियें। हमें अपने जीवन में स्वाध्याय, विशिष्ट विद्वानों की संगति एवं उपदेश श्रवण का अवसर मिला है। हमें इससे लाभ हुआ है। यदि हम उपर्युक्त ग्रन्थों का स्वाध्याय–अध्ययन व सच्चे निस्वार्थी विद्वानों की संगति नहीं करेंगे तो हम सत्य ज्ञान को कदापि प्राप्त नहीं हो सकते। यही कारण है कि यत्र–तत्र की अनेक भाषाओं की पुस्तकें पढ़कर कोई ज्ञानी देखने में नहीं आ रहा है। वैदिक साहित्य के अध्ययन एवं योगाभ्यास आदि से मनुष्य ज्ञानी होता है।

हम यह भी अनुभव करते हैं कि वर्तमान युग का पठित व्यक्ति कर्म–फल सिद्धान्त से सर्वथा अपरिचित वा अनभिज्ञ है। कर्म–फल सिद्धान्त को जानने के लिये हमें ईश्वर, जीवात्मा और इस सृष्टि की उत्पत्ति के कारण, जीवात्मा के उद्देश्य व लक्ष्य को जानना होगा। ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वान्तर्यामी, जीवों को उनके पूर्वजन्मों को कर्मानुसार जन्म देने वाली व उनके भूतकाल व वर्तमान काल के कर्मों का सुख–दुःख रूपी फल देने वाली सत्ता है। उसी ईश्वर ने जीवों के कल्याण व उनके कर्मानुसार उन्हें सुख–दुःख व मोक्ष प्रदान करने के लिये इस सृष्टि की रचना की है। वही ईश्वर इसका पालन कर रहा है तथा उसी से इस सृष्टि की यथासमय प्रलय होनी है। प्रलय के बाद निर्धारित अवधि व्यतीत होने पर परमात्मा पुनः अपने सर्वज्ञ ज्ञान व सामर्थ्य के अनुसार सृष्टि की रचना कर अमैथुनी सृष्टि में जीवों को जन्म देते हैं और मनुष्यों को वेदज्ञान भी सुलभ कराते हैं। सृष्टि का दूसरा अनादि व नित्य पदार्थ जीवात्माएक चेतन, अणु–परिमाण, एकदेशी, सूक्ष्म, आंखों से न दीखने वाला, अल्पज्ञ, इच्छा–द्वेष–सुख–दुःख से युक्त, सुख प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील एक अनादि, नित्य, अविनाशी, अनुत्पन्न, अमर, सनातन सत्ता है। ईश्वर संख्या में एक है और जीवात्माओं की संख्या अनन्त है। पूर्वजन्म के कर्मानुसार ईश्वर जीवों को इनकी जाति (मनुष्य, पशु, पक्षी आदि), आयु व भोग (सुख–दुःख) निर्धारित कर भिन्न भिन्न योनियों में जन्म देता है। मनुष्य जन्म भोग व अपवर्ग (मोक्ष) के लिए होता है। अपवर्ग मोक्ष को कहते हैं जो योग–साधना व सत्कर्मो को करके और ईश्वर का साक्षात्कार करने पर प्राप्त होता है। प्रकृति सत्व, रज व तम गुणों वाली त्रिगुणात्मक सूक्ष्म परिणामिनी व विकारिणिनी सत्ता है। यह प्रकृति ही सृष्टि का उपादान कारण है। ईश्वर इस प्रकृति को ही अपने ज्ञान व शक्ति से रूप

व नाम वाली सृष्टि की रचना करते हैं। यह जान लेने के बाद कर्म–फल सिद्धान्त समझा जा सकता है। जीवात्मा अनादि, अविनाशी सत्ता होने के कारण बार–बार कर्मानुसार जन्म व मृत्यु को प्राप्त होकर पूर्वजन्म–जन्म–परजन्म के चक्र में फंसी रहती है। मनुष्य योनि उभय योनि होती है जिसमें मनुष्य शुभ–अशुभ कर्मों को करता है। ईश्वर न्यायाधीश के रूप में उसके प्रत्येक कर्म का फल देने के लिये उसे उसके कर्मों के अनुसार नाना योनियों में जन्म देते हैं। ईश्वर द्वारा जीव के प्रत्येक शुभ व अशुभ कर्म का सुख व दुःख रूपी फल देना ही कर्म–फल सिद्धान्त कहलाता है। यह शुभ कर्मों का शुभ अर्थात् सुख रूपी तथा अशुभ कर्मों का दुःख के रूप में होता है।

कोई भी मनुष्य दुःख नहीं चाहता। दुःख दूर करने के लिये विद्या प्राप्ति की आवश्यकता सहित दुष्कर्मों व अशुभ कर्मों का त्याग करना है। तभी जन्म जन्मान्तरों में सुख व शान्ति मिलेगी। यदि हम विद्या प्राप्ति व शुभ कर्मों का आचरण व अशुभ व असत्य कर्मों का त्याग नहीं करेंगे तो यह निश्चित है कि हमारा यह जन्म व परजन्म निश्चय ही दुःखों से पूरित होगा। अतः मनुष्यों को मत–मतान्तरों के दुष्चक्र में न फंस कर सत्य मत व वेदों की सत्य विचारधारा का अध्ययन कर सच्चे ईश्वर, जीवात्मा व सृष्टि के स्वरूप को जानकर सद्कर्म व ईश्वरोपासना, परोपकार, यज्ञ, दान व विद्याप्रचार के कार्यों को ही महत्व देना चाहिये। इसी से उनका कल्याण हो सकता है।

देश के प्रायः सभी लोग सत्य ज्ञान वा विद्या से दूर हैं। इस कारण वह अपने कर्तव्यों से भी अपरिचित हैं। बहुत से लोग स्वदेश में उत्पन्न होकर अपने देश की धरती व इसकी वायु का सेवन करते हैं। इनसे उत्पन्न अन्न, दुग्ध, फल, निवास व सभी प्रकार की सुविधायें यहीं से प्राप्त करते हैं परन्तु अज्ञानवतावश अपने कर्तव्यों का निर्वाह न कर मिथ्या चक्रों में फंस जाते हैं। ऋषि दयानन्द ने सत्य व असत्य के स्वरूप से परिचित कराने तथा कर्तव्यों की प्रेरणा करने के लिये ही वेदों का प्रचार किया था और आर्यसमाज की स्थापना की थी। लोगों की बहुधा सत्य व वेद में प्रवृत्ति न होने के कारण देशवासियों ने वैदिक सत्य सिद्धान्तों पर ध्यान नहीं दिया। वह लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति व धन, दौलत, सुख व सुविधाओं से आकर्षित होकर उसी में वह गये। इसका परिणाम यह हुआ कि देश में तेजी से जनसंख्या बढ़ी और सब लोगों को भोजन, वस्त्र, शिक्षा, निवास, चिकित्सा, रोजगार आदि सुविधायें समान रूप से न्यायपूर्वक सभी को नहीं मिल सकीं। आज देश में बड़ी संख्या में धन कुबेर हैं तो वहीं प्रतिदिन भरपेट भोजन से वंचित 20 करोड़ से अधिक लोग हैं। यह संख्या अनेक देशों की जनसंख्या से भी अधिक हैं। देश के धनाड्य लोगों को इन निर्धन व साधनहीन लोगों की चिन्ता नहीं है। वर्तमान व्यवस्था से शायद सबको सामाजिक न्याय मिलना सम्भव नहीं है। इस स्थिति में इतना प्रचार तो सबको करना ही चाहिये कि जो इस देश में उत्पन्न हुआ है वह इस देश के प्रति अपने कर्तव्यों को जाने और विदेशी कुचक्रों व हानिकारक विचारधाराओं में न फंसे। देश से अविद्या व अन्धविश्वास भी दूर होने चाहिये और सभी सामाजिक परम्परायें सबके लिये कल्याणकारी एवं हितकारी होनी चाहिये जिससे भविष्य में हम उन दुःखों से बच सकें जो इससे पूर्व गुलामी के दिनों में हमें झेलने पड़े हैं। देश तभी संसार का उन्नत देश बनेगा जब इसके सभी लोग देशभक्त एवं स्वदेश के पूर्वज ऋषि–मुनियो तथा राम–कृष्ण–दयानन्द पर गौरव करने वाले होंगे।

-१९६ चुक्खूवाला-२
देहरादून-२४८००१

वैदिक वाङ्मय में शिक्षा-विज्ञान

❑ ब्र. दिनेश आर्य...✍

शिक्षा शब्द '**शिक्ष विद्योपादाने**' धातु से टाप् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है। तदनुसार '**शिक्ष्यते उपादीयते विद्या यया सा शिक्षा**' अर्थात जिसके द्वारा विद्या का उपादान किया जाए वही शिक्षा है। शिक्षा किसे कहते है इस बात का प्रतिपादन करते हुए स्वामी दयानन्द जी लिखते हैं- '**जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और जिनसे अविद्यादि दोष छुटें उसको शिक्षा कहते हैं**'।[१]

शिक्षा के द्वारा जिस विद्या की प्राप्ति की जाती है वह सार्थक तभी है जब वह अज्ञान के बन्धन से विमुक्त करने वाली हो अतः कहा गया है-'**सा विद्या या विमुक्तये**'।[२] शिक्षा से ही इहलोक में सर्वांगीण 'अभ्युदय' एवं परलोक में परम 'निः श्रेयस्' की प्राप्ति होती है। शिक्षा हमारे जीवन को अमृत प्रदान करने का साधन है '**विद्ययाऽमृतमश्नुते**'[३] अर्थात विद्या से अमृत की प्राप्ति होती है।शिक्षा समाज व राष्ट्र की नींव है। जिस समाज व राष्ट्र की शिक्षा जितनी सुदृढ़ और व्यापक होगी वह समाज और राष्ट्र उतना ही सशक्त और सुदृढ़ होता है। शिक्षा अथवा विद्या गुरुओं की गुरु है '**विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरुणां गुरुः।**'[४] शिक्षा के विना मनुष्य पशु के समान मानव है '**विद्याविहीना पशुः।**'[५] अतः जीवन को धार्मिक, सच्चरित्रवान और सदाचार से युक्त बनाने के लिए मनुष्य को उत्तम शिक्षा की आवश्यकता है। मनुष्य जीवन श्रेष्ठ व उन्नत बनाने का एक ही आधार है, वह है शिक्षा। स्वामी दयानन्द जी ने भी अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में कहा है - '**सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म, स्वभावों को धारण कराना माता-पिता, आचार्य और सभी सम्बिन्धियों का परम कत्तर्व्य है।**'[६] जिस मनुष्य में शिक्षा का अभाव होता है वह मनुष्य गहन अन्धकार में ही गोते लगाता रहता है।

वैदिक शिक्षा विज्ञान मनुष्य को न केवल जीवन जीने की कला बताती है अपितु मानव जीवन श्रेष्ठ व उत्तम गुणों से युक्त किस प्रकार बन सकता है इसका दर्शन भी कराती है। वैदिक वाङ्मय में शिक्षक और छात्र का सम्बन्ध आचार्य और अन्तेवासी के रूप में बताया गया है। आचार्य अर्थात् '**आचारं ग्राहयति, आचिनोत्यर्थान्, आचिनोति बुद्धिमिति वा**'[७] अर्थात् जो सदाचार को ग्रहण और बुद्धि का संचय कराता है। अन्तेवासी का अर्थ होता है हृदय में वास करने वाला। इसलिए जब एक बालक आचार्य के पास शिक्षा प्राप्त करने आता है तो आचार्य उससे कहता है '**मम हृदयं ते हृदयं ददामि मम चित्तमनुचित्तं तेऽस्तु।**'[८] आचार्य और अन्तेवासी के इसी सम्बन्ध को बताते हुए वैदिक ग्रन्थ तैत्तिरीयोपनिषद में वर्णन है '**आचार्य पूर्वरूपम्। अन्तेवास्युत्तररूपम्। विद्या सन्धिः, प्रवचनं सन्धानम्।**'[९] अर्थात् आचार्य और अन्तेवासी के बीच में सम्बन्ध बनाने वाली '**विद्या**' कहलाती है।

वैदिक शिक्षा से राष्ट्र की रक्षा कैसे संभव है? इस बात का दर्शन यह वेदमन्त्र कराता है। '**ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति।**'[१०] अर्थात् ब्रह्मचर्य तथा तप के द्वारा ही राजा राष्ट्र की रक्षा करता है। न केवल राष्ट्र की रक्षा अपितु राष्ट्र विकास ब्रह्मविद्या एवं क्षत्रविद्या से सम्भव है, इस बात का दर्शन कराते हुए यजुर्वेद का यह मन्त्र बताता है-

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।
तं लोकं पुण्य प्रज्ञेषं यत्र देवा सहाग्निनः॥[११]

अर्थात् ब्रह्मविद्या व क्षत्रविद्या जहाँ पर समान होती है वही राष्ट्र विकसित व समृद्ध होता है। परन्तु इस विद्या का स्वरूप कैसा हो तो इसका सरल-सा उत्तर है '**वैदिकी शिक्षा।**'

वैदिक शिक्षा के कारण ही आज भी भारतीय संस्कृति अपने जीवन्त स्वरूप का दर्शन कराने में सक्षम हो रही है। मानव समाज कैसे सक्षम, सबल और सुसंस्कृत हो, परा और अपरा ज्ञान के द्वारा भौतिक तथा आध्यात्मिक जीवन कैसे समृद्ध हो यही वैदिक शिक्षा का लक्ष्य है। अतः एक मानव का दूसरे मानव के प्रति व्यवहार का ज्ञान देते हुए ऋग्वेद कहता है-

'सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत। अत्रा सखाय सख्यानि जानते भद्रैषां
y { elfuZgr kf/kokfp û *[१२]

अर्थात् जैसे लोग सक्तु को चालनी से शुद्धकर उपयोगी भाग को निकालकर व्यवहार में लाते हैं वैसे ही तुम भाषा को शुद्ध करके उसी का व्यवहार करो जिसके फलस्वरूप तुम्हारे बीच प्रेम और श्रद्धा उत्पन्न हो तथा पवित्र वचन के कारण वहाँ लक्ष्मी निवास करे। न केवल सुख समृद्धि अपितु संगठन के लिए भी वेद हमें संदेश देकर बार-बार कहता है-

'सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।'[१३]

वैदिक वाङ्मय में शिक्षा प्राप्त करने के लिए चार स्तम्भों का वर्णन किया है-

'चतुर्भिः प्रकारैर्विद्योपयुक्ता भवति। आगमकालेन स्वाध्यायकालेन प्रवचनकालेन व्यवहारकालेनेति।'[१४]

अर्थात् विद्या चार प्रकार से आती है। चारों का वर्णन कर महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं कि **"जिससे मनुष्य सावधान होकर ध्यान देकर पढ़ाने वाले से विद्यादि पदार्थ ग्रहण करता है, उसे 'आगमकाल' कहते हैं। जो पढ़ते समय में आचार्य के मुख से शब्द, अर्थ और सम्बन्धों की बातें प्रकाशित हो उनको एकान्त में स्वस्थचित्त होकर पूर्वापर को विचार करके ठीक-ठीक हृदय में दृढ़ करता है उसे 'स्वाध्यायकाल' कहते हैं। प्राप्त की हुई विद्या को अन्यों को प्रीति से पढ़ाने को 'प्रवचनकाल' कहते हैं। जब अपने आत्मा में सत्यविद्या होती है तब यह करना यह न करना वही ठीक-ठीक करके सिद्ध करने को 'व्यवहारकाल' कहते हैं।"**[१५] इस प्रकार ये चार स्तम्भ शिक्षा प्राप्त करने के बताये हैं।

वैदिक शिक्षा प्रणाली न केवल पुस्तकीय ज्ञान पर बल देती है अपितु उसमें व्यवहारिक आदर्श और चरित्र निर्माण महत्वपूर्ण रूप से बताया जाता है। विद्यार्थी को बिना भेदभाव के सामाजिक समानता तथा शारीरिक श्रम की शिक्षा भी दी जाती है। इसलिए वैदिक वाक्य में उद्बोधन किया गया है-

'समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः।'[१६]
'तथा सग्धिश्च मे सपीतिश्च मे॥'[१७]

अर्थात् तुम सबका जल पीने का स्थान एक हो तथा भोजन करने का स्थान एक हो। वैदिक शिक्षा का लक्ष्य पुस्तकों के अध्ययन के साथ-साथ जीवन का आध्यात्मिक दृष्टिकोण भी मानव के सम्मुख रखना है। जीवन में शरीर और पार्थिव संसार ही नहीं शरीर के पीछे आत्मा है और पार्थिव जगत् के पीछे आध्यात्मिक जगत् है। यजुर्वेद का मन्त्र हमें सांसारिक जगत् को देखने का उद्देश्य बताता है- **'हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।'**[१८] अर्थात् संसार की चमचमाहट से आध्यात्मिक सत्ता आँखों से ओझल हो रही है, इस पर्दे को उठा देने से वह जगत् दिखने लगता है जिससे हम बेखबर रहते हैं। यथार्थ ज्ञान वह है जिसमें भौतिक तथा आध्यात्म विद्या का सम्मिश्रण रहता है।

प्रत्येक शिक्षा का अपना-अपना एक निर्धारित पर्यावरण होता है। वैदिक शिक्षा का पर्यावरण विशाल एवं विस्तृत है। पर्यावरण के आधार पर हम वैदिक शिक्षा विज्ञान को तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं-

१. भौतिक पर्यावरण।
२. मानसिक पर्यावरण।
३. सामाजिक पर्यावरण।

१. भौतिक पर्यावरण- पर्यावरण का अर्थ होता है (परि+आवरण) अर्थात् चारों तरफ का वातावरण। एक शिष्य को शिक्षा किस पर्यावरण में देनी चाहिए इसका वर्णन भी हमें वैदिक वाङ्मय में मिलता है। ऋग्वेद में एक मन्त्र इसी बात को इंगित करता हुआ कहता है-

उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्। धिया विप्रो अजायत॥[१९]

अर्थात् पर्वत की उपत्यका और नदी के संगम में विप्र बनता है। इस प्रकार वैदिक वाङ्मय में शिक्षा प्राप्त करने का स्थान भी अद्भुत एवं सुरम्य है। इसलिए भौतिक पर्यावरण में रहकर शिष्य का प्रकृति के साथ सीधा सम्पर्क स्थापित हो जाता है। वैदिक दृष्टि यही है कि शिक्षा-संस्थाओं को प्रकृति के शुद्ध वातावरण में रखने से ही बाल-मस्तिष्क को शुद्ध संस्कारों में विकसित किया जा सकता है।

२. मानसिक पर्यावरण- मानसिक पर्यावरण में बालक की शैक्षिक उन्नति को ध्यान में रखकर वैदिक वाङ्मय में गुरुकुल का निर्माण किया गया है। गुरुकुल अर्थात् अपने गुरु का घर। गुरुकुल में आचार्य बालक को माता-पिता की हर प्रकार की शिक्षा व सहायता देता है। गृह त्यागकर गुरु के पास जाकर अध्ययन करने की परम्परा भारतवर्ष में अनेकों वर्षों से चली आ रही है। आचार्य गुरुकुल में जब शिष्य को शिक्षा देता है तो ईश्वर से दोनों के रक्षार्थ एवं ज्ञान का सम्बन्ध जोड़ने की प्रार्थना करके कहता है-

सहनाववतु सह नौ भनक्तु सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विना वधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥[२०]

३. सामाजिक पर्यावरण- सामाजिक पर्यावरण के अन्तर्गत यह बात आती है कि छात्र अपने अपने गुरु के पास किस प्रकार स्थिर होकर पढ़ें। गुरुकुल में बालक को शिक्षा देने के लिए स्वीकार करते हुए आचार्य उसे इस प्रकार सुरक्षित सम्भालकर रखता है जैसे माता अपने पुत्र को गर्भ में सुरक्षित सम्भालकर रखती है-

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः।
तं रात्रीस्तिस्त्र उदरे बिभर्त्ति तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः॥[२१]

वैदिक वाङ्मय में छात्र को शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक उन्नति कैसे हो? इसका भी पाठ पढ़ाया जाता है। इस प्रकार वैदिक वाङ्मय का शिक्षा विज्ञान बालक की उन्नति के लिए सर्वोत्कृष्ट व उत्तम साधन है। बालक जब तक अध्ययन करता है तब तक ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जीवन में क्या-क्या करना है इसका ज्ञान भी शिक्षा के पश्चात छात्र को दिया जाता है। शिक्षा समाप्त हो जाने के पश्चात आचार्य शिष्य को उपदेश देता हुआ कहता है-

सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः।
सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्॥
मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्य देवो भव।
अतिथि देवो भव। एष आदेशः एष उपदेशः॥[२२]

इस प्रकार हम यदि वैदिक शिक्षा की तुलना आज की पाश्चात्य शिक्षा से करें तो हमारी शिक्षा उससे उत्तम एवं जीवनदर्शन को देने वाली है। आज की शिक्षा मनुष्य को रोटी कमाने लायक तो बना रही है परन्तु शिक्षा का मूल उद्देश्य मनुष्य को मनुष्य बनाना पीहले है। अतः यदि हमें वेद के उपदेश **'मनुर्भव'** को प्राप्त करना है तो वैदिक शिक्षा पद्धति से ही अध्ययन-अध्यापन करना होगा। तथा इसी शिक्षा विज्ञान से हमारा भारत पुनः विश्वगुरु के पद को अलङ्कृत कर सकता है।

सन्दर्भ सूचीः-

१. स्वामन्तव्यामन्तव्य प्रकाश २२।
२. विष्णु पुराण १/१९/४।
३. यजुर्वेद ४०/१४।
४. नीतिशतक २०।
५. नीतिशतक २०।
६. सत्यार्थ प्रकाश, समुल्लास- ३।
७. निरुक्त १/२।
८. पारस्करगृह्य सू॰ का. २/२/१६।
९. तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली।
१०. अथर्ववेद ११/३/५।
११. यजुर्वेद २०/२५।
१२. ऋग्वेद १०/७१/२।
१३. ऋग्वेद १०/१९१/२।
१४. महाभाष्य, आह्निक १।
१५. व्यवहारभानु।
१६. अथर्ववेद ३/३०/६।
१७. यजुर्वेद १८/९।
१८. यजुर्वेद ४०/१७।
१९. ऋग्वेद ८/६/२८।
२०. तैत्तिरीयोपनिषद्, ब्रह्मानन्दवल्ली।
२१. अथर्ववेद ११/५/३।
२२. तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली।

- शास्त्री तृतीय वर्ष
गुरुकुल पौन्धा देहरादून (उ.ख.)- २४८००७

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-विज्ञान

❑ ब्र. सारांश आर्य...✍

शिक्षा शब्द '**शिक्ष विद्योपादाने**' इस पाणिनीय धातु से निष्पन्न होता है जिसका सामान्य अर्थ विद्या का उपादान करना है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी शिक्षा की व्याख्या करते हुए लिखते हैं - **जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढती होवें तथा अविद्यादि दोष छुटे उसको शिक्षा कहते हैं।**[१] सामान्य जीवन में हम शिक्षा को इस प्रकार भी समझ सकते हैं कि - जिसके द्वारा मनुष्य इस संसार को जानता है, जीवन के सत्य व असत्य उचित व अनुचित कार्य, कर्तव्य व अकर्तव्य, भलाई व बुराई, स्वहित, समाजहित, देशहित, व वैश्विक कल्याण को जानकर उन सभी कार्यों को करता है तथा अन्यों को भी अच्छा व बुरा क्या हैं? यह समझाने की प्रेरणा करता है। शिक्षा नेत्र के समान है जिससे मनुष्य सत्य और असत्य के स्वरूप को भली भांति समझता है। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। आज कल हम सभी अंग्रेजी भाषा में शिक्षा को '**एजुकेशन**' नाम से सम्बोधित करते है। यह शब्द लेटिन भाषा के दो शब्दों '**एड**' तथा '**जुकेट**' से मिलकर बना है। जिसका अर्थ क्रमशः बाहर तथा निकलना है। अर्थात् जो छात्र की भीतरी क्षमताओं को बाहर निकालती है वही शिक्षा है और संस्कृत में तो शिक्षा शब्द का और भी विस्तृत तथा भावपूर्ण अर्थ 'शासु अनुशिष्टौ' इस धातु द्वारा निष्पन्न होता है। प्राचीन ऋषि मुनियों की दृष्टि में शिक्षा वहीं थी जो अन्दर की क्षमताओं को तथा संभावनाओं को केवल बाहर ही न निकाले अपितु उनको अनुशासित भी करें। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जिस शिक्षा का प्रतिपादन किया है वह अपने अन्दर बहुत बड़े विज्ञान के रहस्यों को समाये हुए है। शिक्षा एक निर्माण का साधन है जो कि संस्कारों द्वारा विकसित होती है। स्वामी दयानन्द जी के अनुसार शरीर और आत्मा को उत्तम बनाने के लिए संस्कारों की एक कड़ी तैयार की गई है। स्वामी दयानन्द जी की शिक्षा पद्धति में शिक्षा का उत्तरदायित्व केवल स्कूलों पर ही नहीं सौपा गया अपितु माता, पिता और आचार्य इन तीनों को शिक्षक की जिम्मेदारी दी गयी है। स्वामी जी स्पष्ट लिखते हैं - '**मातृमान् पितृमानाचर्यवान्पुरूषो वेदः**'[२] अर्थात् जब तीनों शिक्षक प्रशस्त, धार्मिक तथा विद्वान् हो तभी बालक ज्ञानवान् बन जीवन में उन्नति को प्राप्त कर सकता है।महर्षि दयानन्द द्वारा शिक्षा की योजना को तीन भागों में बांटा गया है। १. गर्भाधान से जन्म तथा जन्म से पांच वर्ष पर्यन्त माता के अधीन। २. छः वर्ष से आठ वर्ष तक पिता के अधीन। ३. आठ वष से अड़तालीस वर्ष पर्यन्त आचार्य के संरक्षण में रहकर पूर्ण सोंगोपांग का अध्ययन करना। वर्तमान में शिक्षा पद्धति का सबसे बडा दोष बालक को प्रारम्भ में ही विद्यालय में भेजना है। परन्तु वैदिक शिक्षा पद्धति में बालक की शिक्षा तभी से प्रारम्भ मानी जाती है जब बालक का गर्भ में शरीर बनना शुरू हो जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी लिखते है कि जिस प्रकार पदार्थों के उत्कृष्ट करने की विद्या है, ठीक उसी प्रकार सन्तान को भी उत्कृष्ट करने की विद्या है। जिस प्रकार भवन बनाने से पूर्व उसके नक्शे को तैयार किया जाता है, फिर उसी के अनुरूप कार्य किया जाता है। इसी प्रकार जन्म से पूर्व उसकी उत्कृष्टता के लिए कार्य माता-पिता के विचारों द्वारा प्रारम्भ हो जाता है। इस सन्दर्भ में स्वामी दयानन्द जी ने बहुत सुन्दर कहा है कि- '**माता-पिता को अति उचित है कि गर्भाधान से पूर्व, मध्य और पश्चात् मादक द्रव्य, मद्य, दुर्गन्धयुक्त तथा बुद्धिविनाशक पदार्थों को छोड़कर जो शान्ति, आरोग्य, बल तथा**

बुद्धिवर्धक हो ऐसे पदार्थों का सेवन करें।'[३] इससे स्पष्ट होता है कि बालक की शिक्षा, दीक्षा गर्भ से ही प्रारम्भ हो जाती है। प्राचीन ऋषिमुनियों तथा आधुनिक विद्वानों द्वारा माना गया यह एक नितान्त सत्य है कि गर्भस्थ शिशु पर सबसे अधिक प्रभाव उसकी माता का ही पड़ता है। अत: निरूक्तकार ने माता को **'माता निर्माता भवति'**[४] यह कहकर सम्बोधित किया है। इससे यह पता लगता है कि माता निर्माण करने वाली होती है। जैसा चिन्तन, मनन तथा भोजन व दिनचर्या माता की होगी, वैसा संस्कार बालक पर भी पड़ेगा। अत: बालक का मस्तिष्क उन्नत हो तथा शरीर पुष्ट हो, एतदर्थ गर्भस्थ शिशु के क्रमश: सीमन्तोनयन तथा पुंसवन संस्कार कर दिये जाते हैं। पुन: जन्म के पश्चात् पाँच वर्ष पर्यन्त माता ही सन्तान को शिक्षा देती है, बोलना सिखाती है तथा व्यवहारादि की शिक्षा भी देती है। सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास में स्वामी दयानन्द जी लिखते हैं कि- **'माता अपने बच्चों को अन्य भाषाओं का ज्ञान भी करावे, जिससे कोई धूर्त, पाखण्डी उसको बहकाने न पावे'**[५] इसी श्रृंखला में पांच से आठ वर्ष तक पिता बालक को शिक्षा प्रदान करता है। पिता बालक को कुछ-कुछ अक्षर ज्ञान के साथ-साथ सांसारिक वस्तुओं का ज्ञान कराता है जिससे बालक की बुद्धि का विकास हो सके। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित शिक्षा गर्भ से ही प्रतिपादित हो जाती थी, जिसके कारण बालक जीवन में उन्नति को प्राप्त करता था और यही कारण है हमारे पूर्वज अत्यन्त ज्ञानी तथा स्वस्थ हुआ करते थे। आठ वर्ष की आयु में माता-पिता बालक को आचार्यकुल में भेज देवें। जहाँ वह पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करता हुआ पच्चीस वर्ष तक विद्याध्ययन करता है। जो माता पिता अपने पुत्र को शिक्षणालय में न भेजे उस माता व पिता को बालक का शत्रु स्वीकार किया है तथा वह बालक सभा में बगुले के समान परिहास का पात्र बनता है।

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठित:।
न शोभते सभामध्ये हंस मध्ये बको यथा।।[६]

महर्षि दयानन्द जी लिखते है-प्रत्येक गुरुकुल में पढने वाले विद्यार्थी को समान भोजन, समान शिक्षा आदि देनी चाहिए। चाहे वह किसी राजा का पुत्र हो अथवा किसी दरिद्र का। शिक्षा का दायित्व समाज का है, जब हर गुरुकुल में पढ़ने वाला विद्यार्थी यह अनुभव करेगा कि मुझे मेरे माता-पिता ने नहीं अपितु समाज ने पढाया है तो वह भी समाज के प्रति अपने कर्तव्य को समझ सकेगा तथा इस प्रकार जब छात्र अपने सम्पूर्ण शिक्षा का समय भेदभाव रहित होकर बिताएंगे तो निश्चित रूप से समाज से ऊँच-नीच का भाव स्वत: ही नष्ट हो जायेगा और समानता की भावना फैलेगी। महर्षि दयानन्द ने नि:शुल्क शिक्षा का प्रावधान किया है। क्योंकि शुल्क देने की अवस्था में सबका रहन-सहन एक जैसा नहीं हो सकता। शुल्क देने से विद्यार्थी के मन में यह भाव भी आ जाता है कि मै जो शिक्षा ले रहा हूँ वह पैसों से ले रहा हूँ जिस कारण वह गुरु का अनादर तथा गलती करने में वह कदापि संकोच नहीं करता। स्वामी जी ने नगर तथा गाँव से दूर रहकर शिक्षा लेने का विधान किया है जिससे बालक दूषित वातावरण से बच सके। आजकल तो शहर तथा गाँवों का वातावरण इतना प्रदूषित हो चुका है कि यहाँ रहकर निर्बाध रूप से शिक्षा ग्रहण करना असम्भव होने लगा है। **'भद्रं कर्णेभि: श्रृणुयाम देवा:'**[७] सोचना भी अभिशाप हो हो चुका है। इस वातावरण में बालक तथा बालिका का चरित्रवान् होना अति असम्भव कार्य है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की दृष्टि में सह शिक्षा का विरोध किया गया है। उनके अनुसार बालक तथा बालिका की पाठशाला के बीच दो कोश का अन्तर होना चाहिए। वें माता-पिता से न मिल सके और न ही आपस में पत्रव्यवहार करें, ताकि वह सांसारिक चिन्ता से मुक्त होकर विद्याध्ययन में तत्पर हो सके। लड़कियों की पाठशाला में अध्यापिका, भृत्य, अनुचर आदि सभी स्त्रियाँ तथा लड़कों की पाठशाला में सभी पुरुष होवें। स्वामी जी ने बालक व बालिकाओं के लिए आठ प्रकार के मैथुनों से दूर रहकर एकाग्रचित्त होकर विद्याध्ययन करने का

निर्देश दिया है।

स्पर्शनं कीर्तनं केलिः स्मरणं गुह्यभाषणम्,
संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिष्पत्तिरेव च।
एतन्मैथुनमष्टांगं प्रवदन्ति मनीषिणः,
विपरीत ब्रह्मचर्यं एतत् एवाष्टलक्षणम्।।[८]

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी आर्ष पाठ विद्या के परिचायक थे। पाठ्यक्रम में आर्ष पाठविधि को लागू करना ही उनका मुख्य उद्देश्य था। क्योंकि आर्ष पाठविधि को पढकरके ही मनुष्य सत्यासत्य एवं परम तत्व को भली भांति जानकर उसकी ओर तत्पर हो सकता है। आर्ष पाठविधि में कम परिश्रम तथा अधिक ज्ञान की प्राप्ति, धन को महत्ता न देते हुए सर्वाङ्गीण विकास, सभी प्रकार के आडम्बरों से मुक्ति तथा जीवन के मूल्यों को जाना जा सकता है जो कि अनार्ष ग्रन्थों से असम्भव है। महर्षि दयानन्द जी लिखते है कि- आर्ष ग्रन्थों का पढना मानों समुद्र में एक गोता लगाना और बहुमूल्य रत्नों का पाना तथा अनार्ष ग्रन्थों का पढना जैसे खोदा पहाड़ निकली चूहियाँ। ऋषि दयानन्द द्वारा रचित शिक्षा पद्धति एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के तहत चरम लक्ष्य तक पहुँचने वाली है। जैसे सर्व प्रथम वर्णोच्चारण शिक्षा का अध्ययन करते हुए यह जानना कि किस अक्षर का क्या उच्चारण है तथा वह किस स्थान से बोला जाता है, उसका प्रयत्न क्या है? इत्यादि। इसके पश्चात् व्याकरण पढे ताकि अन्य ग्रन्थों को जाना जा सके एवं जिससे शब्दों की उत्पत्ति किस प्रकार होती है तथा उनके अर्थ क्या होंगे, यह सब समझा जा सके। भली भांति व्याकरण पढने से किसी भी कोष को पढने की आवश्यकता नही होती व इसके माध्यम से वेदाङ्गों उपाङ्गों, ब्राह्मणग्रन्थों उपनिषदों का अध्ययन करते हुए वेदों को ठीक ठीक समझा जा सकता है क्योंकि व्याकरण को वेदों का मुख **'मुखं व्याकरणं स्मृतम्'**[१०] माना है। इन सभी बातों से महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिक्षा के प्रति चिन्तन कितना वैज्ञानिक था, यह बोध होता है। महर्षि दयानन्द जी एक युग पुरुष थे जिन्होंने ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त ऋषि मुनियों के सत्यज्ञान के द्वारा अज्ञान व अन्धकार को मिटाने का प्रयत्न किया। वेदों की सुरसरिता को पुनः इस धरापर लाने का सम्पूर्ण श्रेय महर्षि दयानन्द जी को ही जाता है उनके द्वारा प्रतिपादित शिक्षा एक ऐसा विज्ञान है जिसको यदि समझकर अपनाया जायें तो अत्यन्त लाभ होगा। अतः सभी मनुष्यों को महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित शिक्षा पद्धति को अपनाना चाहिए।

सन्दर्भ सूची-

१. स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश
२. शतपथ ब्राह्मण १४.६.१०.५
३. सत्यार्थप्रकाश (तृतीय समुल्लास)
४. निरुक्त
५. सत्यार्थप्रकाश (द्वितीय समुल्लास)
६. सत्यार्थप्रकाश (द्वितीय समुल्लास)
७. सामवेद (मन्त्र संख्या १८७५)
८. ब्रह्मचर्य ही जीवन है। (लेखक- स्वामी शिवानन्द सरस्वती, संस्मरण- १९६२)
९. पाणिनीय शिक्षा

- शास्त्री तृतीयवर्ष,
गुरुकुल पौन्धा देहरादून,

प्रवेश-परीक्षा

जो अभिभावक अपने सन्तानों को श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास की शाखा संस्थाओं में प्रवेश दिलाने के इच्छुक हैं, वे अपने सन्तानों को आर्षन्यास द्वारा आयोजित बालसंस्कार एवं प्रवेश-शिविर दिनाङ्क २ जून से ९ जून २०१९ तक में भेज सकते हैं। ९ जून २०१९ रविवार को प्रातः ८:०० से ११:०० तक प्रवेश परीक्षा आयोजित होगी।

स्थान - श्रीमद्दयानन्दार्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुल पौन्धा, देहरादून (उ.ख.)

सम्पर्कसूत्र-९४११११०६१०४, ९४१११३१०५३०, ८८१०००५०९६

योगदर्शनशिक्षणम्

❑ शिवदेव आर्यः...✍

क्रमशः...

अभावप्रत्ययालम्बना वृत्तिर्निद्रा

-योगदर्शन-१/१०

पदार्थव्याख्या-

अभाव=अभाव अर्थात् जाग्रत और स्वप्न अवस्था विषयक वृत्तियों के ज्ञान के अभाव रूप **प्रत्यय**=अज्ञान रूप प्रतीति का ही **आलम्बना**=आश्रय बनाने वाली **वृत्तिः**=तमोगुण प्रधान वृत्ति **निद्रा**=निद्रा है।

सूत्रार्थ- जाग्रत और स्वप्न के ज्ञान के अभाव का जो कारण तमोगुण है, उसका आश्रय करने वाली निद्रा वृत्ति है।

व्यासभाष्य-सा च सम्प्रबोधे प्रत्यवमर्शात् प्रत्ययविशेषः। कथम्? सुखमहमस्वाप्सम्। प्रसन्नं मे मनः प्रज्ञां मे विशारदीकरोति। दुःखमहमस्वाप्सं स्त्यानं मे मनो भ्रमत्यनवस्थितम्। गाढं मूढोऽहमस्वाप्सम्। गुरूणि मे गात्राणि। क्लान्तं मे चित्तम्। अलसं मुषितमिव तिष्ठतीति। स खल्वयं प्रबुद्धस्य प्रत्यवमर्शो न स्यादसति प्रत्ययानुभवे। तदाश्रिताः स्मृतयश्च तद्विषया न स्युः। तस्मात् प्रत्ययविशेषो निद्रा। सा च समाधावितरप्रत्ययवन्निरोद्धव्येति।

व्यासभाष्य पदार्थ व्याख्या-सा च=और वह निद्रा से **सम्प्रबोधे** = जागने पर **प्रत्यवमर्शात्**=स्मरण होने के कारण **प्रत्ययविशेषः**=एक प्रकार का ज्ञान है। **कथम्**=यह ज्ञान किस प्रकार का है? **अहम्**=जागने पर मैं **सुखम्**=सुखपूर्वक **अस्वाप्सम्**=सोया, **मे**=क्योंकि मेरा **मनः**=मन **प्रसन्नम्**=प्रसन्न है और **मे**=मेरी **प्रज्ञाम्**=बुद्धि को **विशारदीकरोति**=निर्मल कर रहा है। **अहम्**=मैं **दुःखम्**=दुःखपूर्वक **अस्वाप्सम्**=सोया **मे**=क्योंकि मेरा **मनः**=मन **स्त्यानम्**=अलसाया हुआ है और **भ्रमत्यनवस्थितम्**=चञ्चल होकर भ्रमित हो रहा है। **गाढम्**=गाढ निद्रा में **अहम्**=मैं **मूढः**=मूढ होकर **अस्वाप्सम्**=सोया, क्योंकि **मे**=मेरा **गात्राणि**=अंग **गुरूणि**=भारी हो रहे हैं और **मे**=मेरा **चित्तम्**=चित्त (मन) **क्लान्तम्**=थका हुआ है और **क्लान्तम्**=थका हुआ है **अलसम्**=अलसाया एवं **मुषितम् इव**=खोया हुआ सा **तिष्ठति**=रहता है **इति**=इस प्रकार की स्मृतियाँ हैं। **असति प्रत्ययानुभवे**=यदि निद्रावस्था में उपरोक्त प्रकार के ज्ञान को वृत्ति न माना जाये तो **स खलु अयं प्रबुद्धस्य**=उस जागे हुए मनुष्य को **प्रत्यवमर्शो**=इस प्रकार का स्मरण **न**=नहीं **स्यात्**=होना चाहिए, **च**=और **तदाश्रिताः**=निद्रा के अनुभव जन्य ज्ञान के आश्रित रहने वाली **स्मृतयः**=स्मृतियाँ भी **तद्विषया**=अनुभवात्मक ज्ञान के विषय में **न**=नहीं **स्युः**=होनी चाहिए। **तस्मात्**=इस कारण **निद्रा**=निद्रा वृत्ति **प्रत्ययविशेषो**=एक विशेष प्रकार का ज्ञान है। **सा च**=और वह निद्रा वृत्ति भी **समाधौ**=समाधि में **इतर**=अन्य **प्रत्ययवत्**=प्रमाण आदि वृत्तियों के समान **निरोद्धव्या**=निरोध करने योग्य है **इति**=ऐसा।

व्यासभाष्य व्याख्या-निद्रा से जागने पर निद्रा सम्बन्धी स्मृति के आने से निद्रा भी एक प्रकार का विशेष ज्ञान (वृत्ति) है। यह ज्ञान (वृत्ति) किस प्रकार का है? मैं सुख से सोया, मेरा मन प्रसन्न है, मेरी बुद्धि को निर्मल कर रहा है। मैं दुःखपूर्वक सोया, मेरा मन अकर्मण्य चञ्चल होकर घूम रहा है। मैं गाढ़निद्रा में मूढ़ावस्था में सोया। मेरे अंग भारी हो रहे हैं। मेरा चित्त थका हुआ, अलसाया और खोया हुआ सा है। जागे हुए मनुष्य का ऐसा स्मरण इस प्रकार के अनुभवात्मक ज्ञान के बिना नहीं होना चाहिए। उस अनुभव के आश्रित रहने वाली स्मृतियाँ भी उसके विषय में नहीं होनी चाहिए। इस कारण निद्रा एक विशेष प्रकार का ज्ञान अथवा वृत्ति है। वह निद्रा समाधि अवस्था में अन्य वृत्तियों के समान निरोध करने योग्य है।

महर्षिदयानन्देनोक्त - चौथी (निद्रा) अर्थात् जो वृत्ति अज्ञान और अविद्या के अन्धकार में हो, उस वृत्ति का नाम निद्रा है। **- ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, उपासनाविषय**

शेष अग्रिम अंक में.....

- गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

प्रो. महावीर अग्रवाल व डॉ. रघुवीर वेदालङ्कार को मिला राष्ट्रपति पुरस्कार

❑ डॉ. रवीन्द्र कुमार...

आर्य समाज के लिए वह अत्यन्त रोमांचक व हर्ष का क्षण था, जब हमारे दो प्रतिष्ठित विद्वानों को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। राष्ट्रपति पुरस्कार मिलना अत्यन्त गौरवास्पद व उत्कृष्ट वैदुष्य का प्रमाणभूत होता है। जो विद्वान् संस्कृत भाषा व वेदादि शास्त्रों के उन्नयन हेतु अहर्निश प्रयत्नशील रहता हो तथा जिसने संस्कृत भाषा व वेदादि शास्त्रों के उन्नयन हेतु अहर्निश प्रयत्नशील रहता हो, तथा जिसने संस्कृत भाषा के विकास व संवर्धन हेतु अतुलनीय योगदान दिया हो, वह व्यक्ति राष्ट्रपति पुरस्कार का पात्र होता है। भारत सरकार देश के सभी प्रान्तों से पुरस्कार हेतु अनुशंसाएँ माँगती है, उन अनुशंसाओं में से सर्वोत्तम योग्य पन्द्रह विद्वानों को प्रतिवर्ष यह पुरस्कार दिया जाता है। इस पुरस्कार में विद्वानों को पाँच लाख रुपये की राशि व प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है। यह पुरस्कार स्वयं भारत के राष्ट्रपति अपने करकमलों से प्रदान करते हैं, परन्तु इस बार अपवादस्वरूप राष्ट्रपति महोदय की अनुपस्थिति में उपराष्ट्रपति वैंकया नायुडु जी ने यह पुरस्कार ४ अप्रैल २०१९ को दिल्ली में प्रदान किया था, परन्तु इन पुरस्कारों की घोषणा स्वतन्त्रता दिवस की पूर्वसंन्ध्या पर ही हो जाती है। इन पुरस्कारों में पौराणित जगत् अपना प्रभाव अधिकतम रखता है। जिसके कारण प्रारम्भ से आज तक पौराणिक जगत् के ही विद्वानों को यह पुरस्कार प्राप्त होते रहे हैं। आर्य समाज के विद्वान् तो इनमें अंगुलिगण्य ही हैं। डॉ. रामनाथ वेदालंकार जी, प्रो. जयदेव वेदालंकार जी, डॉ. प्रशस्यमित्र जी ही इस श्रेणी में हैं।

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि वर्ष २०१८ के लिए यह पुरस्कार प्रो. महावीर अग्रवाल जी व डॉ. रघुवीर वेदालङ्कार जी को मिला है। आर्य समाज के ये दोनों विभूतियाँ अत्यन्त विख्यात हैं। वस्तुत: ये किसी परिचय की भी अपेक्षा नहीं रखती हैं, पुनरपि अन्य आर्यबन्धुओं के बोधनार्थ परिचयरूप में यह आलेख प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार के प्रतिष्ठित पुरस्कार जब किसी विद्वान् को प्राप्त होते हैं, तो समाज के प्रत्येक वर्ग को उनसे एक महत्त्वपूर्ण प्रेरणा, आत्मविश्वास व ऊर्जस्बल शक्ति प्राप्त होती है।

योग्य विद्वानों का आशीर्वाद मिला, जिसके कारण आप की प्रतिभा द्विगुणित हो गयी। आप शैशव काल से ही मेधावी व वाग्मिता से परिपूर्ण थे। आपने अनेक शास्त्रीय स्पर्धाओं व वाद-विवाद प्रतिस्पर्धाओं में प्रथम स्थान प्राप्त कर अपनी योग्यता को सिद्ध किया। झज्जर में आपने व्याकरणाचार्य पर्यन्त अहर्निश परिश्रम से योग्यता अर्जित की। तत्पश्चात् आपने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार से वेद व संस्कृत विषय में स्नातकोत्तर किया। आपने हिन्दी विषय से स्नातकोत्तर आगरा विश्वविद्यालय से किया। आपने 'वाल्मीकिरामायण में रसविमर्श' विषय पर चौ. चरणसिंह विश्वविद्यालय मेरठ से पी-एच.डी. की उपाधि भी प्राप्त की। इसी विश्वविद्यालय से आपने वेदविषय में डी.लिट कर अपनी शैक्षिक योग्यता का पूर्ण विकास किया। १९७२ में आप पीलीभीत स्थित उपाधि महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में प्राध्यापक पद पर नियुक्त हुए। वहाँ आप संस्कृत विभाग के निरन्तर विभागाध्यक्ष भी रहे। आप की योग्यता तथा गुरुकुल कांगड़ी की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्कृतविभाग में आपको प्रतिष्ठापित किया गया। यहाँ आपने निरन्तर गुरुकुल के विकास व संस्कृत के विकास का कार्य किया। आप गुरुकुल कांगड़ी में वैदिक शोध संस्थान के निदेशक भी रहे। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में विभागाध्यक्ष, संकायाध्यक्ष जैसे पदों के साथ-साथ यहाँ आपने कुलसचिव पद के दायित्व का भी सफलतापूर्वक

निर्वहण किया। आपके नेतृत्व में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने अनेक नवीन आयाम स्थापित किये। आपनी योग्यता व समर्पण को देखते हुए आपको गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय आचार्य व उपकुलपति भी बनाया गया था। इस पद को अलंकृत कर आपने एक महनीय परम्परा का निर्वहण किया था। उस समय में आपकी प्रशासनिक क्षमता से प्रेरित हो उत्तराखण्ड सरकार ने आपको उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी का उपाध्यक्ष भी मनोनीत किया था। उस समय में आपने अनेक राष्ट्रिय व अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलन कर संस्कृत भाषा को एक नवीन गति प्रदान की थी। आपके नेतृत्व में अकादमी ने बहुत प्रगति की। आप उत्तराखण्ड़ संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति पद को भी अलंकृत कर चुके हैं। आप कुलपति का कार्यकाल स्वर्णिम काल है। आपने इस समय में उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय में आर्षपाठविधि को समायोजित कर एक अद्वितीय कार्य सम्पन्न किया। यहाँ आपका कार्यकाल एक सफल कार्यकाल रहा है। तत्पश्चात् सेवानिवृत्ति के उपरान्त आपकी योग्यता, क्षमता, कुशलता व समर्पणभाव को देखकर योगगुरु स्वामी रामदेव जी ने आपको पतञ्जलि विश्वविद्यालय हरिद्वार का प्रतिकुलपति मनोनीत किया है। वर्तमान में आप यहीं पर अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। यहाँ पर भी आपने एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया है। आप पतञ्जलि विश्वविद्यालय में अवैतनिक सेवा प्रदान कर त्यागवृत्ति का उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। आपको सन् २०१५ से निरन्तर भारतसरकार ने श्रीभगवानदास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार का अध्यक्ष भी मनोनीत किया है। आपका सम्पूर्ण जीवन संस्कृत व वेद के लिए समर्पित रहा है। आपकी लेखनी ने निरन्तर सार्थक कार्य किया है। आपकी व्यवहार कुशलता, सरलता व मधुरता का प्रत्येक व्यक्ति गुणगान करता है। आप जैसे अद्भुत व्यक्तित्व को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित कर निश्चित इस पुरस्कार का गौरव बढ़ाया है। आपको इससे पूर्व भी उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, दिल्ली अकादमी, काशी विद्वत् परिषद् आदि अनेक संस्थाओं ने सम्मानित किया है। मैं ईश्वर से आपके दीर्घायुष्य व कुशल स्वास्थ्य की कामना करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि आप निरन्तर आर्यविचारधारा को बढ़ाते हुए वेद व संस्कृत का कार्य करते रहेंगें। मैं भी अपने को धन्य अनुभव करता हूँ कि पी-एच.डी. उपाधि के लिए आपने मेरा अत्यन्त कुशल मार्गदर्शन किया है। प्रतिपल आपका आशीर्वाद हरिद्वार में परिच्छायावत् मेरे साथ बना रहता है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आपका यह आशीर्वाद अजस्ररूप में मुझे व गुरुकुल परिवार को प्राप्त होता रहेगा।

डॉ. रघुवीर वेदालंकार - डॉ. रघुवीर वेदालंकार मूलतः उत्तरप्रदेश के मुज्जफ्फरनगर जनपद के जडबड कटिया नामक गाँव के निवासी हैं। आपके पिता जी आर्यसमाज की विचारधारा से ओत-प्रोत थे। आप किसान परिवार से सम्बन्ध रखते हैं। आपके पिता जी का नाम हरिसिंह है। आपके पिता जी ने आपको गुरुकुल महाविद्यालय झज्जर में वेदादि शास्त्र व संस्कृत पढ़ने के लिए स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी के चरणों में प्रेषित कर दिया। वहाँ आपको स्वामी इन्द्रवेश जी, आचार्य बलदेव जी नैष्ठिक आदि योग्य आचार्यों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। आप शैशव अवस्था से ही अत्यन्त मेधासम्पन्न थे। आप अहर्निश अध्ययन के प्रति इतनी गम्भीर रुचि थी कि आप अपने क्रीडा के समय में भी अध्ययन ही करते रहते थे। आप व्याकरण के विद्यार्थी रहे हैं। आप व्याकरण व वेद के विषय से सदा सम्बन्धित रहे हैं। अध्ययन करते समय आप की गणना मेधावी, प्रतिभासम्पन्न व अनुशासन प्रिय विद्यार्थियों में होती थी। आपके सहाध्यायी बताते हैं कि आपको सम्पूर्ण काशिका कण्ठ थी। जब भी आपको समय मिलता था तो आप काशिका का ही पाठ करते रहते थे। आपने गुरुकुल महाविद्यालय झज्जर से व्याकरणाचार्य पर्यन्त अध्यन कर वेद व व्याकरण में अव्याहतगति प्राप्त की थी। तदुपरान्त आपने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से वेदालङ्कार आदि उपाधियाँ प्राप्त की। आपने एम.ए. व पी-एच. डी. की उपाधि दिल्ली विश्वविद्यालय से प्राप्त की है। आपने शिक्षाजगत् की सर्वोच्च उपाधि डी.लिट् आगरा

विश्वविद्यालय से प्राप्त की है। आप सन् १९७३ में दिल्ली विश्वविद्यालय के रामजस कॉलेज के संस्कृत विभाग में प्राध्यापक पद पर नियुक्त हुए। यहाँ आपने अपनी विद्वत्ता व अध्यापन कुशलता से अनेक योग्य शिष्यों को व्याकरणादि शास्त्रों में निपुण बनाया है। आप लेखनी के अत्यन्त धनी हैं। आप अत्यन्त गम्भीर व सतर्क लेखन में विश्वास करते हैं। आप आर्य समाज की विचारधारा को सतत जीते हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों का आपने गम्भीर अध ययन किया है। आप आर्यसमाज की विचारधारा के प्रबल प्रचारक व प्रसारक हैं। अनेक आर्यसमाजों में आप निरन्तर व्याख्यान करते रहते हैं। आप अनेक राष्ट्रिय व अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलनों में प्रतिभाग कर विद्वत्तापूर्ण शोधलेख प्रस्तुत करते रहे हैं। आप अत्यन्त स्वावलम्बी व अनुशासनप्रिय हैं। प्रत्येक कार्य को उचित समय पर ही पूर्ण कर देना आपकी विशेषता है। आप अध्यात्मप्रिय है। अध्ययन-अध्यापन करते हुए आपने अपनी रूचि को योग में भी प्रवृत्त किया है, जिस कारण ध्यानोपासना आपके जीवन का अभिन्न अंग है। अब तक आप प्राय: पच्चीस ग्रन्थों का प्रणयन कर चुके हैं। आपके वेद, व्याकरण व योग के ग्रन्थ अत्यन्त प्रतिष्ठा को प्राप्त हुए हैं। आपके द्वारा लिखित उपनिषदों में योगविद्या, काशिका का समालोचनात्मक अध्ययन, काशिका हिन्दी व्याख्या आदि ग्रन्थ संस्कृत अकादमियों द्वारा सम्मानित व पुरस्कृत है। इससे आपके लेखन की गम्भीरता का परिचय होता है। आप स्वयं भी उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी, दिल्ली संस्कृत अकादमी आदि विभिन्न संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत हैं। आपको आर्यसमाज सान्ताक्रुझ (मुम्बई) द्वारा वेद-वेदाङ्ग पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। आप जैसे कुशल वक्ता व सिद्धहस्त लेखक को राष्ट्रपति पुरस्कार प्रदान कर इस महनीय पुरस्कार को और भी गौरवपूर्ण बनाया गया है। राष्ट्रपति पुरस्कार मिलने पर आपका अनेकत्र नागरिक अभिनन्दन किया गया है। आपके पैतृक गाँव में भी आपका विशेष स्वागत किया गया है।

सेवानिवृत्ति के उपरान्त भी आपने अध्यापन की परम्परा को निरन्तरता प्रदान की है। आपने मुज्जफ्फरनगर के बरला के निकट तेजलहेडा ग्राम के निकट सरदार पटेल प्रशिक्षण महाविद्यालय की स्थापना के साथ-साथ आर्ष गुरुकुल की भी स्थापना की है। यहाँ आप अहर्निश परिश्रम कर वेदादि शास्त्रों के वेत्ता विद्यार्थियों का निर्माण कर रहे हैं। आपके मन में सदा यह भाव रहा है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के बालकों को उचित शिक्षा के अभाव में उचित आजीविका नहीं मिल पाती है। इस समस्या के समाधान के लिए आपने अपने पैतृक ग्राम में महर्षि दयायनन्द इंटर कॉलेज की स्थापना की है। यहाँ प्रतिदिन यज्ञादि के उपरान्त ही अध्यापन प्रारम्भ होता है। आज यह इंटर कॉलेज क्षेत्र का प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान बन रहा है।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि दीर्घायुष्य व पूर्ण स्वास्थ्य को प्राप्त कर आप युवावर्ग को निरन्तर नव्य-भव्य प्रेरणा देते रहें। आपसे दिशा प्राप्त कर युवावर्ग निश्चित ही अपने ध्येय को प्राप्त होगा। गुरुकुल के नवीन स्नातकों के लिए भी आप प्रेरणास्पद बन अपना आशीर्वाद उन्हें प्रदान करें, जिससे वे भी आपके पथ के पथिक बनें। मेरा भी यह सौभाग्य रहा है कि आपके चरणों में बैठकर मुझे महाभाष्य अध्ययन करने का अवसर गुरुकुल पौन्धा में प्राप्त हुआ है। मैं आपकी विद्वत्ता की गम्भीरता को अत्यन्त समीपता से जानता हूँ। मैं अपनी व गुरुकुल परिवार की ओर से आपको पुन: शतश: नमन करता हुआ यही याचना करता हूँ कि आपका वरदहस्त हम सब पर सदा बना रहे।

आप दोनों विद्वानों का यह सम्मान सम्पूर्ण आर्यजगत्, गुरुकुलजगत् व आर्षपरम्परा का सम्मान है। यह भी एक विचित्र संयोग है कि पुरस्कृत दोनों विद्वान् स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी के शिष्य व गुरुकुल झज्जर के स्नातक हैं। दोनों का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में गुरुकुल कांगड़ी से रहा है। दोनों पूर्णत: आर्य विचारधारा के पोषक है। अत: एत यह क्षण वास्तव में अत्यन्त हर्षोल्लास का है। हम सब इस क्षण आनन्द लेते हुए इन दोनों विद्वानों को आदर्श मानकर अपना जीवन भी इसी पथ पर अग्रसर करने का प्रयास करें।

- स्नातक,

गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

संस्कृतशिक्षणम्

❑ शिवदेव आर्य...✍

क्रमशः...

क्रिया (धातु) विचार

धातु रूप कैसे बनते हैं, इसका विवेचन इस प्रकार है –

लट् लकार (वर्तमान काल)

वर्तमान काल को कहने के लिए लट् लकार का प्रयोग किया जाता है। जैसे-**छात्रः पठति** (छात्र पढता है)। यहाँ पढना रूपी क्रिया वर्तमानकालिक है। अतः यहाँ **पठति** लट् लकार में किया गया है।

लट् लकार के रूप बनाने के नियम

पठ्(पढ़ना) धातु के रूप स्मरणार्थ प्रस्तुत हैं –

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

लट् लकार के रूप बनाने के लिए धातु के अन्त में क्रमशः इस प्रकार के संक्षिप्त रूप जोड़े जाते हैं :-

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	धातु+अति	धातु+अतः	धातु+अन्ति
मध्यम पुरुष	धातु+असि	धातु+अथः	धातु+अथ
उत्तम पुरुष	धातु+आमि	धातु+आवः	धातु+आमः

उदाहरण स्वरूप हस् (हँसना) धातु के साथ संक्षिप्त रूप इस प्रकार जोड़े जायेंगे-

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	हस्+अति=हसति	हस्+अतः=हसतः	हस्+अन्ति=हसन्ति
मध्यम पुरुष	हस्+असि=हससि	हस्+अथः=हसथः	हस्+अथ=हसथ
उत्तम पुरुष	हस्+आमि=हसामि	हस्+आवः=हसावः	हस्+आमः=हसामः

इसी प्रकार लिख् (लिखना) धातु के भी रूप होंगे –

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	लिख्+अति=लिखति	लिख्+अतः=लिखतः	लिख्+अन्ति=लिखन्ति
मध्यम पुरुष	लिख्+असि=लिखसि	लिख्+अथः=लिखथः	लिख्+अथ=लिखथ
उत्तम पुरुष	लिख्+आमि=लिखामि	लिख्+आवः=लिखावः	लिख्+आमः=लिखामः

इसी प्रकार से अन्य धातुओं के रूप बनाये जा सकते हैं।

लङ् लकार (भूतकाल)

भूतकाल को कहने के लिए लङ् लकार का प्रयोग किया जाता है। जैसे – **गौरवः श्वः सत्यार्थप्रकाशम् अपठत्** (गौरव ने कल सत्यार्थप्रकाश पढ़ा)। यहाँ पर **अपठत्** (पढ़ा) रूपी क्रिया भूतकालिक है। अतः यहाँ भूतकाल अर्थ में लङ् लकार का प्रयोग हुआ है।

लङ् लकार के रूप बनाने के नियम

पठ्(पढ़ना) धातु के रूप स्मरणार्थ प्रस्तुत हैं -

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लङ् लकार के रूप बनाने के लिए धातु के अन्त में क्रमशः इस प्रकार के संक्षिप्त रूप तथा प्रथम में 'अ' जोड़ देने चाहिए, जो इस प्रकार हैं :-

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अ+धातु+अत्	अ+धातु+अताम्	अ+धातु+अन्
मध्यम पुरुष	अ+धातु+अः	अ+धातु+अतम्	अ+धातु+अत
उत्तम पुरुष	अ+धातु+अम्	अ+धातु+आव	अ+धातु+आम

उदाहरण स्वरूप हस् (हँसना) धातु के साथ संक्षिप्त रूप इस प्रकार जोड़े जायेंगे-

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अ+हस्+अत्=अहसत्	अ+हस्+अताम्=अहसताम्	अ+हस्+अन्=अहसन्
मध्यम पुरुष	अ+हस्+अः=अहसः	अ+हस्+अतम्=अहसतम्	अ+हस्+अत=अहसत
उत्तम पुरुष	अ+हस्+अम्=अहसम्	अ+हस्+आव=अहसाव	अ+हस्+आम=अहसाम

इसी प्रकार लिख् (लिखना) धातु के भी रूप होंगे -

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अ+लिख्+अत्=अलिखत्	अ+लिख्+अताम्=अलिखताम्	अ+लिख्+अन्=अलिखन्
मध्यम पुरुष	अ+लिख्+अः=अलिखः	अ+लिख्+अतम्=अलिखतम्	अ+लिख्+अत=अलिखत
उत्तम पुरुष	अ+लिख्+अम्=अलिखम्	अ+लिख्+आव=अलिखाव	अ+लिख्+आम=अलिखाम

इसी प्रकार से अन्य धातुओं के रूप बनाये जा सकते हैं। **शेष अग्रिम अंक में...** **-गुरुकुल पौन्धा, देहरादून**

आओ, चलें! आर्यों के तीर्थस्थल...

आवागमन सूचना

आओ, चलें! गुरुकुल पौन्धा, देहरादून...

सभी आर्यपुरुषों से निवेदन है कि अपने-अपने आर्य समाजों से वाहनों की व्यवस्था कर उत्सव में पधारने की कृपा करें। आर्य समाज मन्दिर प्रेमनगर, देहरादून के सामने से गुरुकुल के लिए गुरुकुल की ओर से वाहन की व्यवस्था रहेगी। रेल अथवा बस द्वारा गमनागमन करने वाले सज्जन 08810005096 पर तथा 09411106104 **(आचार्य डॉ. धनञ्जय)** पर सम्पर्क अवश्य करें।

गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली-49 से 30 मई 2019 को रात्रि 10 बजे देहरादून के लिए बसें चलेंगी। जोकि दिल्ली-हरिद्वार दर्शन कराते हुए देहरादून पहुँचेंगी तथा देहरादून से सहस्रधारा होते वापस दिल्ली पहुँचेंगी। मार्ग में भोजन की व्यवस्था गुरुकुल ज्वालापुर महाविद्यालय, हरिद्वार (मन्त्री - स्वामी यतीश्वरानन्द जी) में रहेगी। इन बसों से यात्रा करने वाले यात्री स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी (मो.-9868855155) से सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्र : - (देहरादून) 9411106104, 9411310530, 8810005096

(दिल्ली) 9868855155, 9810420373

आओ, चलें! आर्यों के तीर्थस्थल | ओ३म् | आओ, चलें! गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

पावका नः सरस्वती

॥ निमन्त्रण पत्र ॥

श्रीमद् दयानन्द-वेदार्ष-महाविद्यालय (न्यास)

119 गौतमनगर, नई दिल्ली-110049 द्वारा संचालित शाखा नं.-3

श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल

आर्यपुरम्, दून वाटिका, भाग-2, पौन्धा देहरादून (उत्तराखण्ड)

का

त्रिदिवसीय वार्षिकमहोत्सव एवं स्थापना दिवस समारोह तथा चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी, त्रयोदशी एवं चतुर्दशी विक्रम संवत् २०७६, सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१२०

तदनुसार 31 मई, 1 एवं 2 जून 2019 शुक्र, शनि, रविवार

को हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है,

आप इष्ट मित्रों सहित सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

स्वाध्याय एवं योग-साधना शिविर

दिनाङ्क - 27 मई से 31 मई 2019 तक

मार्गदर्शक - स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती आचार्य - डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई)

संयोजक - श्री सुखवीर सिंह आर्य

बालसंस्कार एवं प्रवेश-परीक्षा शिविर

दिनाङ्क - 2 जून से 9 जून 2019 तक संयोजक - आचार्य चन्द्रभूषण शास्त्री

सम्पर्क सूत्रः (देहरादून) 09411106104, 9079600568, 09411310530, 08810005096
(दिल्ली) 09868855155, 09810420373

पंजीयन संख्या : UTTBIL/2008/23546 डाक पंजीयन नं. : UA/DO/DDN/397/2019-2021

मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक एवं स्वामी : आचार्य धनञ्जय द्वारा श्रीमद्दयानन्द आर्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुल, दून वाटिका-२ पौंधा, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित एवं जयरति प्रिन्टिंग प्रेस, ३५ कांवली रोड, देहरादून से मुद्रित।
मुद्रण तिथि - ३ मई २०१९ :: डाक प्रेषण तिथि - ८ मई २०१९